र्कसंग्रहपरकृतटी ओभाषाटी

ARK SANGRAH

Rendered into Hindi

Second edition 600 copies

श्री स्वामी माधवानंदभारतीकृत सुबोधनी भाषाटीका है

प्रोप्राइटर
गणेश प्रसाद वाजपेयी · ॥
सिद्ध विनायक प्रेस · ॥
बनारस ·

दूसरी वार ६०० कापी ॥
ता· ३० अगस्त सन् १८८९
मि· भादो शुक्ल ४ शुक्र सं· १९४६

हरि सिंग.

तर्क संग्रह प्रारम्भः

Taraksangrah
(Translated in Hindi)

॥श्री काशी विश्वनाथपुरी में ढुंढराज के समीप दाऊजी अग्निहोत्री के सिद्धविनायक यन्त्रालय में न्याय का ग्रंथ तर्कसंग्रह जिसपर टीका दो एक भाषा दूसरा संस्कृत पदकृत्य के सहित छापागया जिसे लेना होय उसे ढुंढराज गणेश के पास दाऊजी के दुकान में मिलेगा लिखितं भयरोपाठक छापनेवाला वचनू मि० आषाढ सुदी ८ रविवार सं० १९४६

Propriter Ganesha Prasada Vajapeyi
Sidh Binaek press. Benares



॥ॐश्रीगणेशायनमः॥

ॐनिधायहृदिविश्वेशंविधायगुरुवंदनं
बालानांसुखबोधायक्रियतेतर्कसंग्रहः १

॥टीकाभाषाप्रारम्भः॥

टी॰ नत्वाश्रीभारतीतीर्थगुरुमीश्वरशब्दितं भाषातर्कसंग्रहस्यवृत्तिंरभेसुबोधनीम् ॥ अन्नंभट्टकहतेहैं किजगतकेईश्वरकाध्यानकरऔरगुरुकोनमस्कारकर मैंबालकोंके सुखपूर्वक बोधकेलियेतर्कसंग्रहग्रंथकाप्रारम्भकरताहूं अनुमानादिरूपयुक्तिसैंतर्क कहतेहैं उसतकीदिकसेसिद्धपदार्थभीतर्ककहातेहैं उन्हकासंग्रहकहेसंक्षेपकहतेहैं यहांपरबालक उन्हेंकहातेहैं जोकिव्याकर्ण काव्य कोशादिकपढेहैं औरन्यायशास्त्रनहींयहतर्कशास्त्र३तरह अर्थात् उद्देश १ लक्षण २ और परीक्षासैं ३ प्रवृत्तहोताहै नाममात्रसैंवस्तुकाकथनकरना उद्देशकहाताहै औरअसाधारणधर्मसैंलक्षणकहतेहैं सोआगेस्पष्टलिखेंगे औरइसपदार्थकायहलक्षणहोसकताहै यानहीं ऐसेविचारसैं परीक्षाकहते हैं ॥ १ ॥ ॥

॥टीकासंस्कृतप्रारम्भः॥

टी॰ॐश्रीगणेशायनमः ॐश्रीगणपंनमस्कृत्यपार्वतीशंकरंपरंमेयाचंद्रजसिंहेनक्रियतेपदकृत्यकं १ यस्मादिदमहंमन्येबालानामुपकारकं तस्माद्धितकरंवाक्यंवक्तव्यंविदुषासदा विश्वेशंजगत्कर्त्तारंश्रीसांबमूर्तिंहृदिमनसिनिधायनितरांधारयित्वागुरुवंदनंचविधायेत्यर्थः बालेति अत्राधीतव्याकरणकाव्यकोशानधीतन्यायशास्त्रोबालःप्रासादावतिव्याप्तिवारणायानधीतन्यायेति तनं घयेऽतिप्रसक्तिवार

णायाधीनमाकरणोति सुखेति सुखेनानायासेन बोधाय पदार्थतत्वज्ञानायेत्यर्थः तर्क्यंते प्रमितिविषयीक्रियंते इति तर्का द्रव्यादिपदार्थास्तेषां संग्रहः संक्षेपेणोद्देशलक्षणपरीक्षा यस्मिन्स ग्रन्थः नाममात्रेण वस्तुसंकीर्तनमुद्देशः यथा द्रव्यं गुण इति असाधारणधर्मो लक्षणं यथा गंधवत्वं पृथिव्याः लक्षितस्य लक्षणं संभवति न वेति विचारः परीक्षा अत्रोद्देशस्य पक्षज्ञानं फलं लक्षणस्येतरभेदज्ञानं फलं परीक्षाया लक्षणे दोषपरिहार इति मंतव्यं ॥ १ ॥

द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायाभावाः सप्तपदार्थाः तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्ममनांसि नवैव ॥

टी॰ तहांपर द्रव्यादिपदार्थोंका उद्देश करते हैं द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७ ए सातही पदार्थ हैं अधिक नहीं और जो कि गोतममत अनुयायियोंने १६ पदार्थ माने हैं सो उन सबोंका इन सातही में अन्तरभाव होता है इन सब पदार्थों में द्रव्यपदार्थका विभाग करके दिखाते हैं तत्रेति तिन ७ पदार्थोंके मध्यमे पृथिवी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ काल ६ दिशा ७ आत्मा ८ और मन ९ एनोही द्रव्य हैं अधिक नहीं और जो कि तमको मीमांशकादिक दशमा द्रव्य मानते हैं सो अच्छे प्रकाशवाले तेजका अभाव है द्रव्य नहीं हैं इसलिये नवही द्रव्य हैं और जो कि मीमांशक लोग शक्ति सादृश्य आदिको पदार्थान्तर मानते हैं सो उन शक्ति सादृश्यादिका भी इन्हीं सात पदार्थों में अंतर्भाव है क्योंकि वस्तुके स्वरूपसे शक्ती जुदी नहीं है और सादृश्य सामान्य पदार्थसें जुदा नहीं है और द्रव्यका सामान्य लक्षण यह है कि गुणवाला क्रियावाला और समवादी कारण द्रव्य कहलाता है समवायिकारणका लक्षण आगे कहेंगे २ संस्कृतटीका

टी० द्रव्येति० तत्रेति तत्रसप्तपदार्थमध्येइत्यर्थः द्रव्याणिनवेत्य न्वयः एवंतत्रेतिपदं चतुर्विंशतिर्गुणाइत्यादिनाप्यन्वेति द्रव्यत्व जातिमत्त्वगुणवत्त्वसमवायिकारणत्वंवा द्रव्यसामान्यलक्षणं

रूपरसगंधस्पर्शसंख्यापरिमाणपृथक्त्वसं योगविभागपरत्वापरत्वगुरुत्वद्रवत्वस्नेहश ब्दबुद्धिसुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नधर्माधर्मसं स्काराश्चतुर्विंशतिगुणाः उत्क्षेपणापक्षेपणा कुंचनप्रसारणगमनानिपंचकर्माणि ३

टी० गुणपदार्थकोविभागकरकहतेहैं रूपेति रूप १ रस २ गंध ३ स्प र्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७ दुःख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न २१ धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार २४ येचौबीसगुणकहातेहैं क्रियाऔरगुणवालानहोवे अथवा गुणत्वजातीवालाहोवैसोगुणकहलाताहै कर्मकोविभागकरक हतेहैं कर्माणीति उत्क्षेपण अपक्षेपण आकुंचनं प्रसारणं ग मनंयेपांचहीनरहकेकर्महैं इनहरएककेलक्षणआगेकहेंगे कर्मसामान्यकालक्षणयेहैकिसंयोग औरविभागकानिरपे क्षकारण अथवा कर्मत्वजातीवालाकर्मकहाताहै ३ ॥

टी० रूपंनिरूपयति रूपेति कर्मनिरूपयतिकर्माणीति ३

परमपरंचेतिद्विविधंसामान्यं नित्यद्रव्यवृत्त योविशेषास्त्वनंताएवसमवायस्त्वेकएव ४

टी० सामान्यपदार्थकोविभागकरकहतेहैं परमपरंचेति दोप्र कारकासामान्यपदार्थहै एकपरदूसराअपरकहाताहै अधिकदेशमेंरहनेवालापरकहाताहै न्यूनदेशमेंरहनेवा ला अपरकहाताहै नित्यद्रव्यमेंरहनेवालेअपनेस्वरूपही सेव्यावर्त्तक अर्थात् दूसरेपदार्थसे अपनेआश्रयकोभे

हकरानेवालेविशेष अनंत असंख्यातहैं औरसमवायप
दार्थ एकहीहै ४॥

टी० परमपरंचेति परसामान्यमपरसामान्यमित्यर्थः परत्वं चाधिकदेशवृत्तित्वं अपरत्वंचन्यूनदेशवृत्तित्वं तदेवहिलक्षणंयदव्याप्त्यतिव्याप्त्यसंभवरूपदोषत्रयशून्यं यथागोः सास्नादिमत्वं अव्याप्तिश्चलक्ष्यैकदेशवृत्तित्वंअतएवगोर्नकपिलत्वंलक्षणंतस्याव्याप्तिग्रस्तत्वात् अतिव्याप्तिश्चलक्ष्यवृत्तित्वेसत्यलक्ष्यवृत्तित्वं अतएवगोर्नशृंगित्वंलक्षणंतस्यातिव्याप्तिग्रस्तत्वात् असंभवश्चलक्ष्यमात्रावृत्तित्वंयथागोरेकशफत्वंनलक्षणंतस्यासंभवग्रस्तत्वात् ४

अभावश्चतुर्विधः प्रागभावः प्रध्वंसा
भावोत्यंताभावोन्योन्याभावश्चेति ५

टी० अभावपदार्थकोविभागकरकेकहतेहैं अभावइतिचार प्रकारकाअभावहोताहै प्रागअभाव १ प्रध्वंसअभाव २ अत्यंतअभाव ३ अन्योन्यअभाव ४ इनगुणादिसबपदार्थोंकेलक्षणआगेकहेंगे अवद्रव्यकालक्षणअलगर कहतेहैं असाधारणधर्मसेंलक्षणकहतेहैं असाधारण धर्मवहकहाताहै कि अपने आश्रयको छोडके दूसरीजगहनरहै और अव्याप्ति अतिव्याप्ति असंभवयेतीनोदूषणसे रहितलक्षणकहाताहै औरइनदोषोंमेंसेकोइएक दोषयुक्तदुष्टलक्षणहोताहै अव्याप्तिवहकहाताहैकि लक्षणने अपनेंकोईएकआश्रयमें रहकरफिरअपने दूसरेआश्रय मेंनहींभीरहना जैसेगोकाकपिलत्वलक्षणअपनाआश्रयकपिलागोमेंरहकरफिरओरगौओंमेंनहींरहता औरअतिव्याप्तिवहकहलातीहै किलक्षणनेअपनालक्ष्ययानेंआश्रय मेंरहकरऔरदूसरेके आश्रयमें रहना जैसागोकासींगलक्षणहै सो अपना आश्रयगोओंमे रहकरफिरदूसरा आश्रयमहिषी आदिमें रहताहै और असंभववहकहलाताहै किलक्ष

एानें अपने आश्रयभरमैंनहीरहना जैसैंएकसफल अर्थात्
टाप गौकालक्षणहैं सोअपनाआश्रय गौमात्रमैं नहीं रहता कि
न्तु घोड़ा आदिमैं रहताहै और लक्षणका प्रयोजनयहहै कि अ
पनें आश्रयका दूसरे पदार्थ से भेदज्ञान और व्यवहारकरादेना
जैसे पृथ्वीका गंधवत्त्वलक्षणहै ॥ ५ ॥ ॥

तत्र गंधवती पृथिवी साद्विविधा नित्या
नित्याच नित्यापरमाणुरूपाअनित्या
कार्यरूपा सापुनस्त्रिविधा शरीरेंद्रिय
विषयभेदात् शरीरमस्मदादीनां ॥ ६

टी॰ सोकहतेहैं गंधवतीति गंधवालापृथ्वीहोताहै यहांपृ
रपृथ्वीलक्ष्ययानें आश्रयहै औरसमवायसंबंधसेगंधउ
सकालक्षणहै सोइतरपदार्थजलादिसें अपनें आश्रयपृ
थ्वीकाभेदज्ञान औरयहपृथ्वीहै यहपृथ्वीहै ऐसाव्यवहार
करादेताहै सोपृथ्वीदोप्रकारकीहै एकनित्यहै अर्थात् उत्प
त्तिविनाशरहितहै दूसरी अनित्यहै अर्थात् उत्पत्तिविनाश
वालीहै नित्यतोपरमाणुरूपहै औरअनित्यघटघटादिका
र्यरूपहै फिरवहअनित्यपृथ्वी शरीर इन्द्रिय औरविषय
रूपहोनेसेतीनप्रकारकीहै सोपृथ्वीमयशरीरहमतुमआ
दिमनुष्य औरपशुपक्षीआदिकाहैं ॥ ६ ॥

टी॰ नित्येति ध्वंसभिन्नत्वेसति ध्वंसाप्रतियोगित्वंनित्यत्वं ध्वंसेति
व्याप्ति॰ वारणाय ध्वंसभिन्नेतिविशेषणं घटादावति व्याप्तिवार
णायविशेष्यदलं ध्वंसप्रतियोगित्वं प्रागभावप्रतियोगित्वंवाऽ
नित्यत्वंयद्वोगायतनंतदेवशरीरंचेष्टाश्रयोवा ६॥

इंद्रियंगंधग्राहकंघ्राणं नासाग्रवर्ति
विषयोमृत्पाषाणादिः ७ ॥

टी॰ औरपृथ्वीस्वरूपइन्द्रियगंधकाग्रहणकरनेंवालाघ्राणक
हलाताहै सोनाशाकेअग्रभागमेंरहताहै औरविषयरूपपृथ्वी
मत्तिका औरपाषाणादिरूपहैं ॥ ७ ॥

टी॰ इन्द्रियमिति चक्षुरादावतिव्याप्तिवारणायगंधग्राहकमिति कालादावतिप्रसक्तिवारणायइंद्रियमिति विषयेति शरीरेंद्रियभिन्नत्वेसति उपभोगसाधनंविषयः शरीरादावतिव्याप्तिनिरासायसत्यंतं परमाण्वादावतिव्याप्तिवारणायविशेष्यदलं कालादिवारणायजन्यत्वेसतिइत्यपिबोध्यम्. ७

शीतस्पर्शवत्यआपः ताश्चद्विविधाः नित्याअनित्याश्च नित्याःपरमाणुरूपाः अनित्याःकार्यरूपाः पुनस्त्रिविधाः शरीरेंद्रियविषयभेदात् शरीरंवरुणलोके॥ ८

टी॰ जलकालक्षणकहतेहैं शीतलस्पर्शवालाजलहोताहै यहांपर जललक्ष्यहै औरसमवायसंबंधसेंशीतलस्पर्शउसकालक्षणहै सोअपनेआश्रयजलकाइतरपदार्थ पृथ्वीआदिसेंभेदज्ञान औरजलऐसे२व्यवहारकोंकराताहै यहरीतिसबजगहजानना सोजलदोप्रकारकाहै एकनित्यदूसराअनित्यहै औरनित्यशब्दकाअर्थ पृथ्वीनिरूपणमेंकहाहै सोसबजगहजानना नित्यजलपरमाणुरूपहै औरअनित्यकार्यरूप अर्थात्उत्पत्तिविनाशवालास्थूलरूपहै सोअनित्यजल फिरशरीरइन्द्रियबिषयरूप होनेसेतीनप्रकारकाहै जलमयशरीरवरुण लोकमेंहैं।८॥

टी॰ शीतेति तेजआदावतिव्याप्तिवारणायशीतेति आकाशावारणायस्पर्शेति कालादावतिप्रसक्तिवारणायसमवायसंबंधेनेति पदंदेयं॥ ८॥

इंद्रियंरसग्राहकंरसनं जिह्वाग्रवर्ति विषयःसरित्समुद्रादिः उष्णस्पर्शवत्तेजः तच्चद्विविधं नित्यमनित्यंच नित्यंपरमाणुरूपं अनित्यंकार्यरूपं ९

टी॰ इन्द्रियरसकाग्राहकरसनाहै सोजिह्वाकेअग्रभागमेंरहताहै औरबिषयरूपजलनदीसमुद्रतालावआदिहैं तेजपदार्थकालक्षणकहतेहैं उष्णस्पर्शवालातेजपदार्थहोताहै सो

दोप्रकारकाहै एकनित्य दूसरा अनित्य नित्यपरमाणुरूपहै अनित्यद्व्यणुकादिकार्यरूपहै परमाणुउसेकहतेहैं जोकिपरमअणुकहैं सूक्ष्मजिहीनदेखनेमेंनआवे औरऐसेदोपरमाणुमिलकरएकद्व्यणुकहाताहै औरतीनद्व्यणुकमिलकर एकत्रिसरेणुहोताहै जोकिसूर्यकेउज्यालेसेझरोखाआदिमेंरजके कनके देखपड़तेहैं ॥ ९ ॥

टी० इंद्रियमिति रसग्राहकमिति रसनेंद्रियरससन्निकर्षादावतिव्याप्तिनिरासायेन्द्रियमितिसरदिति आदिनानडागहिमकरकादीनांसंग्रहः उष्णेतिजलादावतिव्याप्तिनिरासाय उष्णेतिकालादावतिप्रसंगवारणायसमवायसंबंधेनेतिपदंदेयं ९

पुनस्त्रिविधं शरीरेंद्रियविषयभेदात् शरीरमादित्यलोके प्रसिद्धं इंद्रियंरूपग्राहकंचक्षुः कृष्णताराग्रवर्ति विषयश्चतुर्विधः भौमदिव्योदर्याकरजभेदात् ॥ १०

टी० फिरवहअनित्यतेजशरीर इन्द्रियविषयरूपहोनेसेंतीनप्रकारकाहैं तेजमयशरीरसूर्यलोकमेंहै इन्द्रियतोरूपकाग्रहणकरनेवालाचक्षुहैं सोआंखकीपुतलीकेअग्रभागमेंरहताहैं औरविषयरूपतेजपदार्थभौम्यदिव्यऔदर्य आकरजरूपहोनेसेंचारतरहकाहैं १०

टी० इंद्रियमिति घ्राणादावतिव्याप्तिवारणायरूपग्राहकेति कालादावतिव्याप्तिनिरसनायेंद्रियमिति भेदादितिपदंप्रत्येकमभिसंबध्यते ॥ १० ॥

भौमंवन्ह्यादिकमबिंधनं दिव्यं विद्युदादि भुक्तान्नपरिणामहेतुरौदर्यंआकरजंसुवर्णादि ११

टी० भौमतोभूमीमेंहोनेवालाअग्निआदिहै जलहैईंधनवलीनाजिसकाऔरआकाशमेंहोनेवाला बिजलीआदिदिव्यकहलाताहैं भोजनकियेहुयेअन्नपानादिकापचानेकाहेतु उदरमें होनेवाला औदर्यकहाताहै औरआकरकहैं खदानआदि सेहोनेवालासुवर्ण आदिआकरजकहाताहैं ॥ ११ ॥

टी॰ भौममिति आदिपदेन खद्योतगततेजः प्रभृतेः परिग्रहः विद्युदादीति आदिनार्कचंद्रादीनांपरिग्रहः भुक्तस्यान्नादेः पीतस्यजलस्यपरिणामोजीर्णतातस्यहेतुरुदर्य्यमित्यर्थः सुवर्णेति आदिनारजतादिपरिग्रहः ११

रूपरहितः स्पर्शवान्वायुः १२

टी॰ वायुकालक्षणकहतेहैं रूपहीनऔरस्पर्शवालावायु होताहै यहांपरस्पर्शमात्रहीवायुकालक्षण करैंगे तोपृथ्वीआदिमेंलक्षणचलाजावैगा इसलियेरूपरहितलक्षणकाविशेषणकहा औररूपरहितमात्रलक्षणकहैंगेतोआकाशादिमेंलक्षणजावैगा इससेस्पर्शवालाकहा यद्यपिपृथ्वीआदिमेंस्पर्शहै तथापिरूपरहितत्वनहींहै किंतु रूपवालेहैं इसलियेरूपरहितस्पर्शवत्ववायुकालक्षणउनपृथ्वीआदिमेंनहींजाता १२ ॥

टी॰ स्पर्शेति घटादिवारणायविशेषणंआकाशादिवारणायविशेष्यं १२

सद्विविधः नित्योऽनित्यश्च नित्यः परमाणुरूपः अनित्यः कार्यरूपः पुनस्त्रिविधः शरीरेंद्रियविषयभेदात् शरीरंवायुलोके इंद्रियंस्पर्शग्राहकंत्वक् सर्वशरीरवर्ति विषयो वृक्षादिकंपनहेतुः १३ ॥

टी॰ सोवायुदोप्रकारकाहै एकनित्यऔरदूसराअनित्य नित्यतोपरमाणुरूपहै औरअनित्यद्व्यणुकादिकार्यरूपहै द्व्यणुकऔरपरमाणुशब्दका अर्थपूर्वकहाहै सोसबजगहजानना फिरअनित्यवायुशरीर इन्द्रियविषयरूप होनेसेंतीनप्रकारकाहै वायुमयशरीरवायुलोकमेंरहता है औरस्पर्शकाग्राहकइन्द्रियत्वचाहै सोसर्वशरीरमेंरहताहै औरवृक्षादिकेहिलनें अर्थात् कंपनकाहेतुविषयरूप वायुहै १३ ॥

टी॰ इंद्रियमिति चक्षुरादिवारणाय स्पर्शग्राहकमिति कालादा वतिव्याप्तिवारणायेंद्रियमिति रक्षेति आदिपदेनजलादिप रिग्रहः ॥ १३ ॥

शरीरांतःसंचारीवायुःप्राणःसएकोप्युपा धिभेदात् प्राणापानादिसंज्ञांलभते १४

टी॰ औरशरीरकेभीतरसंचारकरनेवालाअर्थात् चलनेफिर नेवालावायु प्राणकहाताहै सोएकहै परन्तुउपाधिभेदसेप्रा णअपानादिसंज्ञापाताहै १४

टी॰ शरीरांतइतिमहावाय्वादावतिव्याप्तिवारणायविशेषणंमन आदिवारणायविशेष्यंधनंजयवारणायसंचारीति उपाधीति मुखनासिकाभ्यांनिर्गमनप्रवेशनात्प्राणःजलादेरधोनयना दपानः भुक्तपरिणामायजाठरानलस्यसमुन्नयनात्समानः अन्नादेरूर्ध्वनयनादुदानःनाडीमुखेषुवितननाद्व्यानइति क्रियारूपोपाधिभेदात्तथाव्यवह्रियतेइत्यर्थः १४

शब्दगुणकमाकाशं तच्चेकंविभुनित्यंच अ तीतादिव्यवहारहेतुःकालःसचैकोविभुनित्यश्च

टी॰ आकाशकालक्षणकहतेहैं शब्दहैगुणजिसकासोआका शकहाताहै सोएकव्यापकनित्यहै इहांपरशब्दसमवायीकार णत्वलक्षणहैं और आकाशउसकालक्ष्यहै कालकालक्षण कहतेहैं भूतभविष्यवर्त्तमान इत्यादिव्यवहारकाहेतुकालक हाताहै सोएकव्यापकऔरनित्यहै १५

टी॰ शब्देति शब्दोगुणोयस्यतत्तथा असंभववारणायशब्दगुण मयं विभ्विति सर्वमूर्त्तद्रव्यसंयोगित्वंविभुत्वं अतीतेतिअतीत इत्यादियोव्यवहारः अतीतोभविष्यद्वर्त्तमानइत्यात्मकस्तस्या साधारणहेतुःकालइत्यर्थः नन्विदंलक्षणमाकाशेतिव्याप्तंव्य वहारस्यशब्दात्मकत्वादितिचेन्न अत्रहेतुपदेननिमित्तहेतोर्विव क्षितत्वात् नचैवंकंठताल्वाद्यभिघातेतिव्याप्तिरितिवाच्यंविभुत्वस्या

पिनिवेशात् १५ ॥

प्राच्यादिव्यवहारहेतुर्दिक् साचैका नित्या विभ्वीच १६

टी० दिशाकालक्षणकहतेहैं प्राच्यादिव्यवहारकाहेतु दिशा कहलातीहै इहांपर दिशालक्ष्ययानेआश्रयहै औरप्राच्यादिव्यवहारहेतुता उसकालक्षणहै औरलक्षणकाप्रयोजनजो पृथ्वी आदिनिरूपणमेंकहाहै सोजानना सोदिशाएकनित्यओरव्यापकहै ॥

टी० प्राचीति इयंप्राचीयमवाचीयंप्रतीचीयमुदीचीत्यादिव्यवहारसाधारणंकारणंदिगित्यर्थः हेतुर्दिगित्युच्यमानेपरमाणवादावतिव्याप्तिः स्यात्तद्वारणायप्राच्यादिव्यवहारहेतुरितिआकाशादिवारणायासाधारणेत्यपिबोध्यं ॥ १६ ॥

ज्ञानाधिकरणमात्मासद्विविधो जीवात्मापरमात्माचेतितत्रेश्वरः सर्वज्ञःपरमात्माएकएव सुखदुःखादिरहितः जीवात्माप्रतिशरीरंभिन्नोविभुर्नित्यश्च सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधनमिंद्रियंमनः तच्चप्रत्यात्मनियतत्वादनंतंपरमाणुरूपंनित्यंच १७

टी० आत्माकालक्षणकहतेहैं ज्ञानकाअधिकरणयानेआश्रयआत्मा कहलाताहै इहांपरभीआत्मालक्ष्यहैसमवायसंबंधसेंज्ञानकाअधिकरणता उसकालक्षणहै सोदोप्रकारकाहै एकपरमात्मा दूसराजीवात्मा तहांपरसर्वज्ञ ईश्वर परमात्माकहाताहै सोएकही नित्यओर व्यापकहै ओरजीवात्मातोहरएकशरीरमेंजुदाजुदाव्यापकओरनित्य है मनकालक्षणकहतेहैं सुखादिककीप्रतीतीकारण मनहै सो अन्तरइन्द्रियकहलाताहै वहमनहरएकआत्माकेसाथ नियमपूर्वक रहनेंसे असंख्यातहै ओरपरमाणुरूपतथानित्यहै इतिद्रव्यनिरूपणं ॥

टी० ज्ञानाधिकरणमितिभूतलादिवारणायज्ञानेतिकालादिवारणा

यसमवायेनेत्यपि देयं ईश्वर इति समवायसंबंधेननित्यज्ञानवा नीश्वरः जीव इति सुखादिसमवायिकारणं जीवइत्यर्थः सुखे ति आत्ममनःसंयोगादिवारणायेंद्रियमिति चक्षुरादिवारणाय सुखेति ॥ १७ ॥

चक्षुर्मात्रग्राह्योगुणोरूपं तच्चशुक्लनील पीतरक्तहरितकपिशचित्रभेदात्सप्तविधं पृथिवीजलतेजोवृत्तितत्रपृथिव्यांसप्तविधं अभास्वरंशुक्लंजलेभास्वरंशुक्लंतेजसि १८

टी॰ अथगुणनिरूपणं चक्षुइन्द्रियमात्रसेंग्रहणकेयोग्यजोगुणसोरू पकहाताहे सोश्वेत श्याम पीत रक्त हरित धूसर और चित्र इनभेदोंसें सातप्रकारकाहे पृथ्वीजलऔरतेजमें रहताहे तहांपरपृथ्वीमें सा तही तरहका होताहै आभास्वरशुक्लजलमें औरभास्वरशुक्लतेजमें रहताहे अभास्वरशुक्लवहकहलाताहै जोकिखुलाहुआ स्वेतनहो औरभास्वरशुक्ल खुलाहुवा स्वेत कहाताहे १८

टी॰ चक्षुरिति रूपत्वादिवारणायगुणपदं रसादिवारणाय चक्षु ग्राह्येति संख्यादिवारणायमात्रपदं यद्यपिप्रभामिति संयोग वारणायगुणपदेनविशेषगुणस्यविवक्षणीयतयाततएवसं ख्यादिवारणंसंभवतीतिमात्रपदंव्यर्थंतथापिसांसिद्धिकद्रव त्ववारणायतदावश्यकंवस्तुतस्तुपरमाणुरूपेऽव्याप्तिवारणा यचक्षुर्मात्रग्राह्यजातिमत्वस्यविवक्षणीयतयाविशेषपदंनदे यं त्र्यणुकादिवारणायगुणपदंतुदेयंसप्तेति रूपमित्यनुषज्जते १८

रसनग्राह्यो गुणो रसः सचमधुराम्ललव णकटुकषायतिक्तभेदात्षड्विधः पृथिवी जलवृत्तिः पृथिव्यांषड्विधः जलेमधुरएव १९

टी॰ रसकालक्षणकहतेहैं रसनाइन्द्रियमात्रसेंहीग्रहणकरनेकेयोग्य जोगुणसोरसकहाताहै सो मधुर (मीठा) खट्टा खारा कडुआ कसेला चिरपरा हो नेसे छः प्रकारकाहे सोपृथ्वी औरजलमें रहताहै तहांपरपृथ्वीमें छःही

प्रकारकाहै औरजलमेंकेवलमधुरहीहै यद्यपिजलमेमधुररसकाभान प्रत्यक्षहरसमयनहीं होताहै तौभी हरीतकी आँवले आदि खाकरजल पीने सें प्रतीत होताहै इसलिये हरीतकीआँवलेआदिजलमेंयो मधुररस उसकार्य्यज कहे क्योंकिइनके खानेहीसेवहमधुररस जाना जाताहैं ॥ १९ ॥

टी० रसनेनि रसत्वादिवारणायगुणइतिरूपादावतिव्याप्तिवारणाय रसनेनि तत्रेति पृथिवीजलयोरित्यर्थः षड्विधेतिइत्यत्ररसइत्यनु वर्त्तते॥१९॥

घ्राणग्राह्योगुणोगंधः सद्विविधः सुरभिर सुरभिश्च पृथ्वीमात्रवृत्तिः ॥ २० ॥

टी० गंधकालक्षण कहतेहैं घ्राण इन्द्रियमात्रसैंग्रहणकरनेकेयोग्य जोगुणसो गंधकहाताहै वहदोप्रकारकाहै एकसुगंधी दूसरा दुर्गंधी सोपृथ्वी मात्र में रहता है २०

टी० घ्राणग्राह्य इतिगंधत्वादावतिव्याप्तिवारणायगुणेतिरूपादावतिव्याप्तिवारणायघ्राणग्राह्य इति पृथिवीति गंधप्रतीतिसत्वेपृथिवीसंबंधसत्वेपृथिवीसंबंधाभावेगंधप्रतीत्यभावइत्यन्वयव्यतिरेकाभ्यांपृथिवीगंधस्यैवजलेप्रतीतिर्बोध्या एवंवायावपि ननुदेशांतरस्थकस्तूरिकसमसंबद्धपवनस्यैतद्देशेतत्संबंधाभावाद्गंधप्रतीत्यनुपपत्तिः नचवाय्वानीतत्र्यणुकादिसंबंधोस्त्येवेति वाच्यम् कस्तूर्य्यान्यूनतापत्तेःकुसुमस्यचसच्छिद्रतापत्तेरिति चेन्न भोक्तृदृष्टविशेषेणपूर्ववत्त्र्यणुकांतराद्युत्पत्तेःकर्पूरादौतुतदभावान्नतथात्वमिति २०॥

त्वगिंद्रियमात्रग्राह्योगुणःस्पर्शः सचत्रिविधः शीतोष्णानुष्णाशीतभेदात् पृथिव्यप्तेजोवायुवृत्तिः तत्रशीतोजले उष्णस्तेजसि अनुष्णाशीतःपृथिवीवाय्वोः रूपादिचतुष्टयं पृथिव्यां पाकजमनित्यंच अन्यत्रापाकजं

नित्यमनित्यंच नित्यगतं नित्यं अनित्यगतमनित्यं २१

टी॰ स्पर्शकालक्षणकहतेहैं त्वचाइन्द्रियमात्रसेग्रहणकरनेकेयोग्य जोगुणसोस्पर्शकहाताहै सोसीतउष्णअनुष्णासीतहोनातीनप्रकार काहै अनुष्णासीनवहकहलाताहै जोकिगरम औरठंढानहोकिन्तु समहोसोस्पर्श पृथ्वीजलतेजऔर वायुमेंरहताहै तहांपरशीतलस्पर्श जलमें उष्णतेजमे और अनुष्णासीन पृथ्वीतथावायुमे रहताहै यहरू पादिचारोंगुणपृथ्वी में पाकसे उत्पन्न और अनित्यहै और पृथ्वी कोछोड़करजलादिकमें पाकसें नहीं उत्पन्न नित्यऔरअनित्यहै नित्यद्रव्य में नित्यहै अनित्य द्रव्य में अनित्यहै तेजसंयोग पाककहाता हैं सोपिठरपाक वादी नैयायक के मतसें अवयवीमेंहोताहै अवयवी स्थूलघटपटादि पदार्थ कहातेहैं औरपीलूपाकवादीवैशेषिकमतसें परमाणु में होताहै परमाणु से पीलू कहतेहैं तहांपरतेजसंयोग होनेसें परमाणु सेआदिलेकरकपालतक अवयवों में क्रियाक्रिया सें आप समेंविभाग विभागसें पूर्व संयोग नाश फिर पूर्व संयोग रूप असमवायी कारणनाश सें अवयवीश्याम घट रूपद्रव्यकानाशहोताहै इसतरहसें परमाणु में पाकसें रक्त रूपादिकोंकी उत्पत्तीहोतीहै फिर रक्त परमाणु मेंक्रिया आदि क्रमसेद्व्यणुकउत्पत्ती द्व्यणुकसें त्र्यणुक उत्पत्ती इस तरहपरकारणगुणपूर्वकरक्तघटादि द्रव्यान्तरकीउत्पत्तीहोतीहैं २१

टी॰ स्पर्शत्वादावतिप्रसक्तिवारणायगुणइति रूपादावतिव्याप्तिवारणायत्वगिंद्रियेति संख्यादिवारणायमात्रपदंतत्रैविध्यमादि चतुस्र्येशीतेतिशीतस्पर्शः उष्णेति उष्णस्पर्शः २१

एकत्वादिव्यवहारासाधारणहेतुः संख्या सा नवद्रव्यवृत्तिः एकत्वादिपरार्धपर्यंता एकत्वंनित्यमनित्यंच नित्यगतंनित्यं अनित्यगतमनित्यं द्वित्वादिकंतुसर्वत्रानित्यमेव २२

टी॰ संख्याकालक्षणकहतेहैं एकत्वादि अर्थात् एकदोबहुत इत्यादि व्यवहारकाहेतु संख्याकहातीहै सोपृथ्वीआदिनवद्रव्यमेंरहतीहैं

एकसेलेकरपरार्द्धतककहींजातीहै फिरवहनित्यऔरअनित्यहै तहां एकत्वरूप संख्यानित्यद्रव्यमें नित्यहै अनित्य में अनित्य और द्वित्वा दिरूपसंख्या सर्वत्रअनित्यहीहै ॥ २२ ॥ २२ ॥ ॥

टी॰एकादिरिति एकत्वमित्यादियोव्यवहार एकोद्वावित्यात्मकस्त स्यहेतुःसंख्याइत्यर्थः घटादिवारणायएकादिरितिकालादिवार णायासाधारणेत्यपिदेयं ननुसंख्यायाअवधिरस्तिनवेत्यतआ ह एकत्वादीति तथाचएकंदशशतंचैवसहस्रमयुतं तथालक्षं चनियुतंचैवकोटिरर्बुदमेवच वृंदंखर्वोनिखर्वश्चशंखः पद्मश्चसागरः अंत्यंमध्यंपरार्द्धंचदशवृद्ध्यायथाक्रमंइतिम हद्रुक्तेः परार्द्धपर्यंतैवसंख्या २२

मानव्यवहारासाधारणंकारणंपरिमाणं स्यात्
नवद्रव्यवृत्ति तच्चतुर्विधं अणुमहद्दीर्घंह्रस्वंच

टी॰परिमाणकालक्षणकहतेहैं मानव्यवहारकाअसाधारणका रणपरिमाणकहाताहै तोलने नापने आदिसेमानकहतेहैं वहप रिमाणचारतरहकाहै एकअणु अर्थात् बहुत सूक्ष्मदूसरामहत् कहैंबड़ा तीसरादीर्घ अर्थात् लंबा चौथाह्रस्व अर्थात् छोटा २३

टी॰मानेति मानंपरिमितिस्तस्यायोव्यवहारइदंमहदिदमणिव त्याद्यात्मकस्तस्यकारणंपरिमाणमित्यर्थः दंडादिवारणाय मानेति कालादिवारणायासाधारणेति शब्दत्ववारणायकारणे ति नवद्रव्येति चतुर्विधमपिपरममध्यमभेदेनद्विविधं तत्रपर माणुत्वह्रस्वत्वेपरमाणुमनसोः मध्यमाणुत्वह्रस्वत्वेद्व्यणुकेप रममहत्त्वदीर्घत्वे गगनादौमध्यममहत्त्वदीर्घत्वेघटादौएतन्मौ क्तिकादिदंमौक्तिकमपिवत्तिव्यवहारस्यापकृष्टमहत्त्वादिगौण त्वबोध्यं एवंकेननात्मजनेह्रस्वमित्यत्रापिनिकृष्टदीर्घत्वा त्गौणत्वं ॥ २३ ॥

पृथग्व्यवहारासाधारणं कारणंपृथक्त्वं सर्व द्रव्यवृत्तिसंयुक्तव्यवहारासाधारणोहेतुः संयोगः

सर्वद्रव्यवृत्तिः २४ ॥

टी० पृथक्त्वकालक्षणकहतेहैं पृथक्त्वअर्थात् भिन्नभिन्नरूप व्यवहारकाअसाधारणकारणपृथक्त्व कहाताहै सोसवद्रव्योंमेंर हताहै असाधारणकारणवहकहलाताहै जोकिहरकिसीकाका रणनहोवैकिन्तुएकहीकाहोवै संयोगकालक्षणकहतेहैं संयुक्त ऐसेव्यवहारकाअसाधारणकारणसंयोग कहाताहै सोसवद्रव्यों मेंरहताहै २४

टी० पृथगिति अयमस्मात्पृथगिति योव्यवहारस्तस्यकारणंपृथ क्त्वमित्यर्थः दंडादिवारणाय पृथगित्यादि कालादिवारणायासा धारणेति पृथक्व्यवहारत्ववारणायकारणेति संयुक्तेति इमौ संयुक्ताविति योव्यवहारस्तस्यहेतुः संयोगमित्यर्थः दंडादिवा रणायसंयुक्तव्यवहारेति कालादिवारणायासाधारणेत्यपिदेयं संयुक्तव्यवहारत्वेतिप्रसक्तिवारणायहेतुरितिउपदेशितलक्षण त्रुषयेअसाधारणपदंदेयंक्वचित्पुस्तकेपरिमाणपृथक्त्वल क्षणेईश्वरेच्छादिवारणायासाधारणेतिदृश्यते तत्वाधुनिके र्न्यस्तमितिवोध्यं २४

संयोगनाशकोगुणोविभागः सर्वद्रव्यवृ त्तिः परापरव्यवहारासाधारणकारणे परत्वापरत्वे पृथिव्यादिचतुष्टयमनोवृत्ति नी ते द्विविधे दिक्कृते कालकृतेचेति दूरस्थे दिक्कृतं परत्वं समीपस्थे दिक्कृतमपरत्वं ज्येष्ठे कालकृतं परत्वं ॥ २५ ॥

टी० विभागकालक्षणकहतेहैं संयोगनाशकजोगुण सोविभा गकहाताहै सोनवद्रव्योंमेरहताहै परत्वअपरत्वकालक्षण कहतेहैं परऔरअपरव्यवहारकेअसाधारणकारणपरत्व और अपरत्वकहातेहैं सोपृथ्वीजलतेजवायुऔरमनमेंर हताहै फिर सोदोप्रकारकेहैं एकदिक्कृतअर्थात् दिशासे·

कियाजाताहै दूसराकालकृतअर्थात् कालसेकियाजाताहै दूरस्थितपदार्थमें दिक्कृतपरत्वरहताहै इसीसे उसपदार्थमें परपर ऐसाव्यवहारहोताहै समीपस्थितपदार्थमें दिक्कृतअपरत्वरहताहै इसीसेउसमें अपरअपर ऐसाव्यवहारहोताहै और ज्येष्ठपुरुषादिकोंमें कालकृतपरत्वरहताहै औरकनिष्ठमेंकालकृतअपरत्वरहताहै इसीसेउनदोनोंमें परऔरअपरव्यवहार होताहै अर्थात् छोटेबड़ेकहातेहैं २५

टी॰ संयोगेतिसंयोगनाशजनक इत्यर्थः कालादावतिव्याप्तिवारणायगुणपदं देयंईश्वरेच्छादिवारणायासाधारणेत्यपिबोध्यं ननुअसाधारणपदादानेगुणपदस्यवैयर्थ्यं स्यात्इतिचेन्न क्रियायामतिप्रसक्तिवारणायतस्याप्यावश्यकत्वात् परेतिपरव्यवहारासाधारणंकारणंपरत्वं अपरव्यवहारासाधारणंकारणमपरत्वमित्यर्थः दंडादिवारणायपरव्यवहारेतिकालादिवारणायासाधारणेतिपरव्यवहारत्ववारणायकारणेति एवमेवद्वितीयेपिबोध्यं॥२५॥

कनिष्ठे कालाकृतमपरत्वं आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वं पृथिवीजलवृत्ति २६

टी॰ गुरुत्वकालक्षणकहतेहैं आद्यअर्थात् प्रथमपतनका असमवायीकारणगुरुत्वकहाताहै सोपृथ्वीऔजलमेंरहताहै प्रथम पतनवहकहलाताहै जोकिफलादिकमेंगुरुत्व अर्थात् भारीपनहोनेसे प्रथमहीअपने वृन्तयानेदंठादिकनसेंगिरताहै फिरवह पतनक्रियाकेनाशपूर्वकद्वितीयादिपतनद्वारावेगहोनेसेंभूम्यादिकमेंगिरताहै इसीतरहसेआद्यस्पंदनभीजानना औरअसमवायीकारणकालक्षणआगेलिखेंगें॥ २६॥

टी॰ आद्येतिदंडादिवारणायासमवायीतिरसादिवारणाय पतनेतिवेगेतिव्याप्तिवारणायाद्येति॥ २६॥

आद्यस्पंदनासमवायिकारणंद्रवत्वं पृथिव्यप्तेजोवृत्ति तद्द्विविधं सांसिद्धिकंनैमि

त्तिकंच सांसिद्धिकंजले नैमित्तिकंपृथि वीतेजसोः पृथिव्यांघृतादावग्निसंयोगज न्यद्रवत्वंतेजसिसुवर्णादौ २७॥

टी॰ द्रवत्वकालक्षणकहतेहैं आद्यस्यंदनअर्थात्धीरेधीरे ढरकनेकाअसमवाईकारणद्रवत्वकहाताहै सोपृथ्वीजल औरतेजमेंरहताहै वहदोप्रकारकाहै एकसांसिद्धिकअर्थात् स्वाभाविकदूसरानैमित्यकअर्थात्कोईनिमित्तसेहोनेवालासां सिद्धिकजलमेंरहताहै नैमित्तिकपृथ्वीऔरतेजमेंरहताहै तहां परघृतादिरूपपृथ्वीमेंअग्निसंयोगसेंउत्पन्नद्रवत्वहै औइसी तरहसेसुवर्णादितेजपदार्थमेंहै जिसतरहसेसुवर्णादितेजप दार्थहै वहसवमुक्तावलीआदिग्रन्थोंमें प्रसिद्धहै ॥२७

॥संस्कृतटीका॥

टी॰ स्यंदनेति रंडादिवारणायासमवायीति रसादिवारणाय स्यंदनेति २७॥

चूर्णादिपिंडीभावहेतुर्गुणःस्नेहो जलमा त्रवृत्तिः श्रोत्रग्राह्योगुणःशब्दः आकाश मात्रवृत्तिः सद्विविधः ध्वन्यात्मकोवर्णा त्मकश्चेति ध्वन्यात्मकोभेर्यादौ वर्णात्म कःसंस्कृतभाषादिरूपः॥२८॥

टी॰ स्नेहकालक्षणकहतेहैं चूर्णादिकेपिंडीभावकाहेतुगुणस्ने हकहाताहै चूर्णपिसानादिकहाताहै औरपिंडीभावउसकापिंड वंधजानाकहाताहै सोवहस्नेहजलमात्रमेंरहताहै शब्दकाल क्षणलिखतेहैं श्रोत्रइन्द्रियमात्रसेंग्रहणकेयोग्यजोगुणसोशब्द कहलाताहै सोआकाशमात्रमेंरहताहै औरदोप्रकारकाहै एक धुनिरूपहै दूसरावर्णरूपहै धुनिरूपशब्दभेरिआदिमेंदंडसंयो गादिनिमित्तसेंउत्पन्नहोताहै दूसरासंस्कृतभाषादिरूपहै२८

टी॰ चूर्णादीति चूर्णपिष्टंतदेवादिर्यस्यमृत्तिकादेःसचूर्णादि स्तस्यपिंडीभावःसंयोगविशेषस्तस्यहेतुर्निमित्तकारणंस्नेहइ

त्यर्थः कालादावतिव्याप्तिवारणाय गुणपदं रूपादावतिव्याप्ति वारणाय पिंडीभावेति चूर्णपदं स्पष्टार्थं श्रोत्रेति शब्दत्वेऽति व्याप्तिवारणाय गुण इति रूपादिवारणाय श्रोत्रग्राह्येति वस्तुतस्तु श्रोत्रोत्पन्न शब्दस्यैव श्रोत्रग्राह्यत्वेन तद्भिन्ने व्याप्तिवारणाय श्रोत्रग्राह्यजातिमत्वे तात्पर्यो गुणपदमनुपादेयमेव २८

सर्वव्यवहारहेतुर्ज्ञानं बुद्धिः साद्विविधा स्मृतिरनुभवश्च संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः २९॥

टी॰ बुद्धिका लक्षण कहते हैं संपूर्ण व्यवहारका हेतु गुण बुद्धि कहलाती है सो दो प्रकारकी है एक स्मृति रूप दूसरी अनुभव रूप संस्कार मात्रसे उत्पन्न ज्ञान स्मृती कहलाती है और उससे भिन्न ज्ञान अनुभव कहलाता है यहां पर यह रीति है कि चक्षु आदि प्रमाणसें उत्पन्न हुआ जो विषयका ज्ञान सो अनुभव कहलाता है उससे भावनारूप संस्कार होता है उस संस्कारसें उसी विषयका कालान्तरमें याद गारी स्मरण कहाता है २९

टी॰ सर्वेति सर्वे ये व्यवहारा आहार विहारादयस्तेषां हेतुर्बुद्धिरित्यर्थः दंडादिवारणाय सर्वव्यवहारेति कालादिवारणायासाधारणेत्यपि देयं संस्कारेति संस्कारध्वंसेतिव्याप्तिवारणाय ज्ञानमिति अनुभवेतिव्याप्तिवारणाय संस्कारजन्यमिति तथापि प्रत्यभिज्ञायामतिव्याप्तिवारणाय संस्कारमात्रजन्यत्वं विवक्षणीयं क्वचित्तथैव पाठः नचैवं सत्यसंभवः तस्य संस्कारजन्यत्वे सतीद्रियार्थसन्निकर्षाऽजन्यार्थकत्वात् तदिति स्मृतित्वावच्छिन्न भिन्नमित्यर्थः तेन यत्किंचित् स्मृतिभिन्नत्वस्य स्मृतौ सत्वेपि न क्षतिः घटादिवारणाय ज्ञानमिति स्मृतिवारणाय तद्भिन्नमिति २९॥

सद्विविधः यथार्थोऽयथार्थश्च तद्वति तत्प्रकारकोनुभवो यथार्थः यथा रजत इदं रजतमिति ज्ञानं सैव प्रमेत्युच्यते तदभाववति तत्प्रकार

कोऽनुभवो ऽयथार्थः यथा शुक्ताविदं रजत मितिज्ञानं ॥ ३० ॥ २ ॥

टी॰ फिरवह अनुभवरूपज्ञानदोतरहकाहै एकयथार्थ अर्थात् जैसाविषयहै उसीतरहकाहोनेसें सच्चाजैसेयह घटहै यहज्ञान होताहै सोई उसीतरहकाहोनेसें सच्चाजैसेयह प्रमारूपहोताहै दूसरा अयथार्थ अर्थात् विषयसें विपरीतझूटाजैसेरज्जुमें सर्पज्ञान और सीपीमें रजतज्ञान होताहै ३०॥ २॥

टी॰ तद्वतीति तद्वतितत्प्रकारोयस्यसतथेत्यर्थः तद्वद्विशेष्यकतत्प्रकारक इतियावत्स्मृतिवारणायानुभव इति अयथार्थानुभववारणायतद्वतीति निर्विकल्पकेतिव्याप्तिवारणायतत्प्रकारक इति तदभावेति तदभाववद्विशेष्यकतत्प्रकारकोनुभवोऽयथार्थानुभवइत्यर्थः यथाशुक्ताविदंरजतमितिज्ञानंस्मृतिवारणायानुभवइति यथार्थानुभवेति व्याप्तिनिरसनायतदभाववतीतिनिर्विकल्पकखंडनायतत्प्रकारकइति ३०॥

सैवाप्रमेत्युच्यते यथार्थानुभवश्चतुर्विधः प्रत्यक्षानुमित्युपमितिशाब्दभेदात् ॥ ३१॥

टी॰ यथार्थअनुभवचारप्रकारकाहै एकप्रत्यक्षदूसराअनुमिति तीसराउपमिति चौथाशाब्दरूपहै अनुमानसेंज्ञानलेनाअनुमितिकहातीहै औरउपमारूपज्ञानसेउपमितिकहतेहैं और शब्दसेउत्पन्नज्ञानशाब्दकहलाताहै ३१

टी॰ यथार्थेति यथार्थानुभवः प्रत्यक्षमेवेतिचार्वाकाः अनुमितिरपीतिकाणादबौद्धौउपमितिरपीतिनैयायिकैकदेशिनः शाब्दमपीतिनैयायिकः अर्थापत्तिरपीतिप्राभाकरः अनुपलब्धिरपीतिभाट्टवेदांतिनौसांभविकैतिह्यकावपीतिपौराणिकाः चेष्टापीतितांत्रिकाः एतेषांमतेऽस्वरसंसंभाव्यतत्स्यचातुर्विध्यंस्वयंदर्शितं ३१

तत्करणमपिचतुर्विधंप्रत्यक्षानुमानोपमा

न शब्दभेदात् व्यापारवदसाधारणं कारणं करणं ३२॥

टी॰ और एचारोंही ज्ञानके करणथानेसाधक अर्थात् उत्पन्न करनेवाले प्रमाणभी चार प्रकारके हैं एक प्रत्यक्ष दूसरा अनुमान तीसरा उपमान चौथा शब्द और चार्वाक अकेले प्रत्यक्ष प्रमाणकोंही मानताहै १ कणाद और बौद्ध अनुमितिकोभी २ नैयायिक एकदेशि उपमितिकोभि ३ नैयायिक शब्दकोभी ४ प्रभाकर अर्थापत्तिकोभी ५ भट्ट वेदांती दोनो अनुपलब्धिकोभी ६ पौराणिक ऐतिह्यकोमानतेहैं व्यापारवाला असाधारणकारण करणकहलाताहै और करणसें उत्पन्नहोकर करणके कार्यका उत्पादकहोवे सो व्यापार कहाताहै जैसे भ्रमिहैं चक्रादिके घूमनेसे भ्रमीकहतेहैं सोकरणजोहै दंड उससे उत्पन्न है और उस दंडका कार्य घट उसका उत्पादकहै ३२

टी॰ नदिति यथार्थानुभवात्मकप्रमायाः करणमित्यर्थः असाधारणेति कालादिवारणाय साधारणेति व्यापारेऽतिव्याप्तिवारणाय व्यापारवदित्यपि इदंव्यापारश्च द्रव्यान्यत्वे सति तज्जन्यत्वे सतीतिज्जन्यजनकः ईश्वरेच्छादावतिव्याप्तिवारणाय तज्जन्यत्वे सतीति कुलालजन्यत्वे सति कुलालजन्यघटजनकत्वं कुलालपुत्रस्याप्यस्त्यतस्तत्रातिव्याप्तिवारणाय प्रथमं सत्यंतं दंडरूपादिवारणाय तज्जन्यजनक इति ३२

अनन्यथासिद्धकार्यनियतपूर्ववृत्तिकारणं ३३

टी॰ अन्यथासिद्धसे जुदा और कार्यसे पूर्वकालमें नेमसें रहनेवाला कारणकहलाताहै और नेमपूर्वक कार्यसे पूर्वकालमें अवश्य रहनेवालेसें कार्य्य उत्पत्ति संभवहोनेपर उसके सहचारी वा दैववशसें प्राप्त पदार्थ अन्यथासिद्ध कहाताहै जैसे कार्यसें पूर्वकालमें नेमसे अवश्य रहनेवाले दंड आदिसें घट उत्पत्तीका संभव होनेपर फिर उस दंडका सहचारी उसके रूपादि और दैववससें प्राप्त रासभ आदि अन्यथा सिद्ध होतेहैं ३३॥

टी० अनन्यथेति कार्यान्नियतात्अवश्यंभाविनी पूर्ववृत्तिः पूर्वलक्षणवृत्तिर्यस्य तत्तथेत्यर्थः अनियतरासभादिवारणायनियतेति कार्यवारणाय पूर्वेति दंडत्वादिवारणायान न्यथासिद्धत्वविशेषणत्वस्यावश्यकत्वेन तत एव रासभादिवारणसंभवे नियतपदमनर्थकमेव अनन्यथासिद्धकार्यपूर्ववृत्तिकारणमिति फलितं अनन्यथासिद्धत्वमन्यथासिद्धिशून्यत्वमन्यथासिद्धिश्चावश्यक्लृप्तनियतपूर्ववर्तिनैव कार्यसंभवे तत्सहभूतत्वं यथावश्यक्लृप्तनियतपूर्ववर्तिभिर्दंडादिभिरेव घटरूपकार्यसंभवे तत्सहभूतत्वं दंडत्वादीनामन्यथासिद्धत्वं ३३

कार्यंप्रागभावप्रतियोगि कारणं त्रिविधम् समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात् यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम् यथा तन्तवः पटस्य पटश्च स्वगतरूपादेः ॥ ३४ ॥

टी० प्रागभावका प्रतियोगी कहे निरूपक अर्थात् जिसका वह अभाव रहा था सो कार्य कहलाता है प्रागभावका लक्षण आगे कहेंगे और वह कारण तीन तरहका है एक समवायी दूसरा असमवायि तीसरा निमित्त जिसमें समवायसंबंधसे कार्य्य उत्पन्न हो सो समवायिकारण कहलाता है जैसे तन्तु पटका और पट अपने रूपादिका समवायिकारण है ३४

टी० प्रागभावेति कालादिवारणाय प्रागिति असंभववारणाय प्रतियोगीति यदिति यस्मिन्समवायसंबंधेन वर्तमानं तदित्यर्थः चक्रादिवारणाय समवेतमिति ३४ ॥

कार्येणकारणेनवासहैकस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सति कारणमसमवायिकारणं यथा तन्तुसंयोगः पटस्य तन्तुरूपं पटरूपस्य ॥ ३५ ॥

टी॰ और कार्य अथवा कारण के साथ एक आश्रय में समवाय संबंध से वर्त्तमान जो कारण सो असमवायिकारण जैसें तन्तुसंयोग पटका असमवायिकारण है और तन्तुरूप पटरूप का है क्योंकि कार्य जो पट तिसके साथ एक आश्रय तन्तुओं में तंतुसंयोग समवायसंबंध से वर्त्तमान है और पट का कारण भी है ऐसेही तंतुरूप भी है क्योंकि अपने रूपादि का कारण जो पट तिसके साथ एक आश्रय तंतुओं में समवायसंबंध से वर्त्तमान है ॥

टी॰ कार्येणेति कार्येण कारणेन वा सह कस्मिन्नर्थे समवेतत्वे सत्यात्मविशेषगुणभिन्नत्वे सति यत्कारणं तदसमवायिकारणं तंतुसंयोगादावव्याप्तिवारणाय कार्येणेति तंतुरूपादावव्याप्तिवारणाय कारणेनेति आत्मविशेषगुणेतिव्याप्तिवारणाय कारणेनेति आत्मविशेषगुणेतिव्याप्तिवारणाय आत्मविशेषगुणभिन्नत्वे सतीति विशेषवारणाय कारणेति ॥ ३५

तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणं यथा तुरीवेमादिकं पटस्य तदेतत्त्रिविधकारणमध्ये यदसाधारणं कारणं तदेव करणम् ॥

टी॰ इन दोनों कारणों सें अलग जो कारण सो निमित्तकारण कहलाता है जैसे तुरी वेमादिक पट का निमित्तकारण है तुरी और वेमादिक कपड़ा विन्ने के ओजार कहाते हैं इन तीनो कारणों में जो असाधारण सोही करण होता है ३६

टी॰ तदुभयभिन्नं कारणं निमित्तकारणमिति समवाय्यसमवायिकारणवारणाय तदुभयभिन्नमिति विशेषादावतिव्याप्तिवारणाय कारणेति तदेतदिति यस्मात्कारणात्करणत्वघटकं कारणमुपदर्शितं तस्मादेतत्त्रिविधसाधकमध्ये यत्साधकतमं तदेव करणमिति भावः इति करणप्रपंचः ३६

तत्र प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षं इंद्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षं तद्द्विविधं निर्विकल्पकं

सविकल्पकञ्च ३७॥

टी॰ इहांपरप्रत्यक्षज्ञानका करणप्रत्यक्षप्रमाण अर्थात् चक्षुआदिइन्द्रियंहोतेहैं इन्द्रिय और अर्थ कहें विषयके संबंधसेउत्पन्नज्ञान प्रत्यक्षकहाताहै सोदोप्रकारकाहै एकनिर्विकल्पदूसरासविकल्प ३७॥

टी॰ तत्रेति प्रमाणचतुष्टयमध्ये दंडादिवारणाय ज्ञानेतिअनुमानादिवारणाय प्रत्यक्षेति इंद्रियार्थेति इंद्रियंचक्षुरादिकमर्थोघटादिस्तयोः सन्निकर्षः संयोगादिस्तज्जन्यंज्ञानंप्रत्यक्षमित्यर्थः सन्निकर्षध्वंसवारणायज्ञानमितिअनुमित्यादिवारणायेंद्रियार्थसन्निकर्षेतिनत्र सोपनेत्रचक्षुषाकथंपदार्थग्रहणंचक्षुषउपनेत्रनिरुद्धत्वेनपदार्थेनसहसन्निकर्षाभावात्कथंवास्वच्छाज्जान्हवीसलिलात्तन्मत्स्यादेश्चक्षुषाग्रहणमितिचेन्न स्वच्छद्रव्यस्यतेजोनिरोधकत्वाभावेनतदंतश्चक्षुः प्रवेशसंभवात् नचेश्वरप्रत्यक्षेव्याप्तिरिति वाच्यं अत्रजन्यप्रत्यक्षस्यैवलक्षितत्वात् ३७

तत्रनिष्प्रकारकंज्ञानंनिर्विकल्पकं यथेदं किंचित् सप्रकारकंज्ञानंसविकल्पकं यथा डित्थोयं ब्राह्मणोयं श्यामोयमिति ३८॥

टी॰ तहांपरप्रकार औरउसकेसंबंधकाभानजिसज्ञानमेंनहीहोता वहनिर्विकल्पकहाताहै विशेषणकोप्रकारकहतेहैं इसका उदाहरण यहहै कि यहकछुहै ऐसासामान्यसेज्ञानभया तहांपरयहनही कहनेसकतेहैं किइसमेयहहै परंतुयहजानाइदेताहै इसज्ञानमेये प्रकारहैं औरएसब उसका संबंधहै प्रकार और उसकेसंबंधकाजिसज्ञानमेभानहोताहै वहसविकल्प कहाताहै जैसेयहडित्थहै यहब्राह्मणहै यहश्यामहै इनज्ञानोमेंक्रमसेडित्थत्वब्राह्मणत्व श्यामत्वप्रकार औरउनकासंबंधभानहोहोताहै ३८

टी॰ तत्रनिष्प्रकारेतिसविकल्पकेतिव्याप्तिवारणायनिष्प्रकारकमिति प्रकारवारणायज्ञानमिति सप्रकारकेति घटादि

वारणायज्ञानमितिनिर्विकल्पिकं वारणायसप्रकारकमिति ३८

प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिंद्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः संयोगः संयुक्तसमवायः संयुक्तसमवेतसमवायः समवायः समवेतसमवायः विशेषणविशेष्यभाव इति चक्षुषा घटप्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः ३९

टी॰ तहांपर प्रत्यक्षज्ञानकाहेतु इन्द्रियका अर्थकेसाथजो संयोगसो छै प्रकारकाहै संयोग संयुक्तसमवाय संयुक्तसमवेतसमवाय समवाय समवेतसमवाय और विशेषणविशेष्यभाव चक्षुइन्द्रियसे घटादिद्रव्य प्रत्यक्ष होनेमें संयोग संनिकर्ष हेतुहै संबंधसे संनिकर्ष कहतेहैं ३९

टी॰ तच्च प्रत्यक्षं षड्विधं घ्राणजरासनचाक्षुषश्रोत्रत्वाचमानसभेदात् ननु प्रत्यक्षकारणीभूतेंद्रियनिष्ठप्रत्यक्षसामानाधिकरण्यघटकसन्निकर्षः कइत्यपेक्षायांतं विभज्यदर्शयति प्रत्यक्षेति लौकिकप्रत्यक्षइत्यर्थः संयोगमुदाहरति चक्षुषेति तथाचद्रव्यचाक्षुषत्वाचमानसेषु संयोगएव सन्निकर्षइतिभावः ३९

घटरूपप्रत्यक्षजनने संयुक्तसमवायः सन्निकर्षः चक्षुःसंयुक्तेघटेरूपस्यसमवायात्

टी॰ घटकेरूपका प्रत्यक्ष होनेमें संयुक्त समवाय संनिकर्षहै क्योंकि चक्षुइन्द्रियसंयुक्त घटमें उसके रूपका समवायहै तहांपर संयुक्तसमवाय अर्थात् इन्द्रियसंयुक्त घटादिमें समवाय होनेसक्ताहै

टी॰ घटरूपेति चक्षुषाजननइत्यनुषज्जते तथाचद्रव्यसमवेतचाक्षुषत्वाचमानसरासनघ्राणजेषु संयुक्तसमवायएव सन्निकर्षइत्यर्थः ४०

रूपत्वसामान्यप्रत्यक्षे संयुक्तसमवेतसमवायः सन्निकर्षः चक्षुःसंयुक्ते घटे रूपंसमवेतं तत्र रूपत्वस्यसमवायात् ४१

टी० रूपत्वसामान्य अर्थात् रूपत्वादिजातिके प्रत्यक्षमें संयुक्त समवेतसमवाय संनिकर्ष हेतु है क्योंकि चक्षुसंयुक्त घट में उसका रूपसमवेत अर्थात् समवाय संबंधसे वर्त्तमान है जिसमें रूपत्वजातिका समवाय है इसलिये संयुक्तसमवेत समवाय अर्थात् इन्द्रियसंयुक्त घटादिमें जो समवेत उसके रूपादि उसमें समवाय रूपत्वादिका ऐसासंबंध यहां परहोने

टी० रूपत्वेति रूपत्वात्मकं यत्सामान्यंतत्प्रत्यक्षइत्यर्थः तत्रापिचक्षुषाजननइत्यनुषज्जते तथाचद्रव्यसमवेतसमवेत चाक्षुषरासनघ्राणजस्पार्शनमानसेषुसंयुक्तसमवेतसमवाय एवसन्निकर्ष इतिभावः अथद्रव्यतत्समवेतप्रत्यक्षेपिसंयुक्तसमवेतसमवायएव सन्निकर्षोस्त्विति चेन्नैतत् ॥ आत्मादेरनाध्यक्षप्रसंगात् ४१

श्रोत्रेणशब्दसाक्षात्कारे समवायः सन्निकर्षः कर्णविवरवर्त्याकाशस्यश्रोत्रत्वाच्छब्दस्याकाशगुणत्वात् गुणगुणिनोश्च समवायात् ४२ ॥

टी० औरश्रोत्रइन्द्रियसे शब्दके साक्षात् कारमें समवायसंनिकर्ष हेतु है क्योंकि कर्ण रूपछिद्रमें वर्त्तमान आकाशको श्रोत्रकहते हैं और आकाशका शब्दविशेषणगुण है गुण औरगुणीका आपसमें समवाय संबंध होताहे इसलिये श्रोत्रइन्द्रियके साथ शब्दकासमवायसंनिकर्ष है ४२

टी० समवायसन्निकर्षमुदाहरति श्रोत्रेणेति शब्दसाक्षात्कार इति जननीय इतिशेषः ननु श्रोत्रशब्दयोः कथंसमवायइ

त्ययेक्ष्यमाणंप्रतीतमुपपाद्यदर्शयतिकरणेति अथसमवाय स्यनित्यत्वेनशब्दप्रत्यक्षेकोव्यापारइतिचेच्छब्दः श्रोत्रंमनः संयोगोवेतिगृहाण ४२

शब्दत्वसाक्षात्कारेसमवेतसमवायः सन्निकर्षः श्रोत्रसमवेतेशब्देशब्दत्वस्य समवायात् अभावप्रत्यक्षे विशेषणविशेष्य भावः सन्निकर्षः ४३

टी० औरशब्दत्वरूपजातिकेप्रत्यक्षहोनेमेंसमवेतसमवाय संनिकर्षहेतुहे क्योंकिश्रोत्रमेंसमवेतशब्दहे उसमेंशब्दत्व कासमवायहे अभावकेप्रत्यक्षमेंविशेषणविशेष्यभावसंनि कर्षहेतुहे विशेषणविशेष्यभावसंबंधविशेषणऔरविशे ष्यकेस्वरूपसेंजुदानहींहोताहे ४३

टी० विशेषणेति विशेषणभावोविशेष्यभावश्चेतिबोध्यंइंद्रि यसंबद्धविशेषणत्वमिन्द्रियसंबद्धविशेष्यत्वमितियावत् विशेषणभावसन्निकर्षमुपपाद्यदर्शयति ४३

घटाभाववद्भूतलमित्यत्र चक्षुःसंयुक्तेभूतले घटाभावस्य विशेषणत्वात् एवंसन्निकर्ष षट्कजन्यंज्ञानंप्रत्यक्षंतत्करणमिंद्रियं तस्मादिन्द्रियंप्रत्यक्षप्रमाणमितिसिद्धम् ३

टी० जैसेघटाभाववत् भूतल अर्थात् घटकेअभाववालाभूत लहै ऐसाज्ञानजहांपरहोताहे तहांपरचक्षुसंयुक्तभूतलअर्था त् भूमीतलहे उसमेंघटकाअभावविशेषणहे इसलियेविशे षणविशेष्यभाव अर्थात् चक्षुसंयुक्तभूतलादिमेंअभावका विशेषणतारूप संनिकर्षबनताहैं इसतरहपरछेप्रकारके सं निकर्ष सेउत्पन्नज्ञानप्रत्यक्षकहाताहें औरउसकाकारणइंद्रि

यहै इसलियेइन्द्रियप्रत्यक्षप्रमाणहेयहवातसिद्धभई इतिप्रत्यक्षखंडः ४४

टी॰ घटाभाववदिति इहभूतलेघटोनास्तीति आदौविशेष्यता सन्निकर्षोवसेयः सप्तम्यंतस्यविशेषणत्वात् प्रत्यक्षप्रमाणमुपसंहरति एवमिति उपदर्शितक्रमेणेत्यर्थः ननुसिद्धांतेप्रत्यक्षज्ञानकरणमिंद्रियार्थसन्निकर्षः किंनस्यादितिचेन्नेत्याह तत्करणमिति प्रत्यक्षप्रमाणं निगमयतितस्मादिति प्रत्यक्षप्रमाकरणत्वादित्यर्थः सिद्धमितिन्यायसिद्धांतेसिद्धमित्यर्थः इतितर्कसंग्रहः पदकृत्येप्रत्यक्षपरिच्छेदः ४४

अनुमितिकरणमनुमानं परामर्शजन्यंज्ञानमनुमितिः व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः यथावन्हिव्याप्यधूमवानयं पर्वत इतिज्ञानंपरामर्शः ४५॥

टी॰ अनुमानकहतेहैं अनुमितिज्ञानकाकरणअनुमान प्रमाणहोताहे परामर्शसेंउत्पन्नज्ञान अनुमितिकहाताहे व्याप्तिविशिष्ट अर्थात् व्याप्तियुक्तपक्षधर्मताकाज्ञानपरामर्शकहाताहे जैसेवन्हीकाव्याप्यधूमवालायहपर्वतहेइसज्ञानसेंपरामर्शकहतेहैं ४५

टी॰ प्रत्यक्षानुमानयोः कार्यकारणभावसंगतिमभिप्रेत्यप्रत्यक्षानंतरमनुमानंनिरूपयति अनुमितीति अनुमितेःकरणमनुमानमित्यर्थः तच्चलिंगपरामर्शएवेतिनिवेदयिष्यतेऽक्षरादावतिव्याप्तिवारणायानुमितीति प्रत्यक्षादावतिव्याप्तिवारणाय अन्विति नन्वनुमितेरेवदुर्निरूपत्वात्तद्घटितानुमानमपिदुर्निरूपमतआह परामर्शेति प्रत्यक्षादिवारणाय परामर्शजन्येति परामर्शध्वंसवारणायज्ञानमिति परामर्शप्रत्यक्षवारणायहेत्वविषयकमित्यपिवोध्यंविषयि

त्तासंबंधेनव्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानंपरामर्शइत्यर्थः घटादिज्ञानवारणायपक्षधर्मेतेति धूमवान्पर्वतइत्यादिज्ञा नवारणायव्याप्तिविशिष्टेति ४५

तज्जन्यंपर्वतोवन्हिमानिति ज्ञानमनुमि तिः यत्रयत्रधूमस्तत्राग्निरिति साहचर्य नियमोव्याप्तिः॥ ४६॥

टी॰ उस्सेउत्पन्नपर्वतवन्हिवालाहै ऐसाज्ञानसोअनुमिति कहातीहै जहां२ धूमहै तहां२ अग्निहै इसतरहपरसहचा रभावकानियमहैसोव्याप्तीकहातीहै ४६

टी॰ तदितिपरामर्शजन्यमित्यर्थः यत्रयत्र धूमेतियत्रयत्र धूमस्तत्रतत्राग्निरितिव्याप्तिरभिनयः तत्रसाहचर्यनिय मइतिलक्षणंसहचरतीतिसहचरस्तस्यभावः साहचर्यं सामानाधिकरण्यमितियावत्तस्यनियमोव्याप्तिरित्यर्थः सचाव्यभिचरितत्वंतच्चव्यभिचाराभावः व्यभिचारश्चसा ध्याभाववद्वृत्तित्वंतथाचसाध्याभाववदवृत्तित्वंव्याप्तिरि तिपर्यवसन्नंवन्हिमान् धूमादित्यादौसाध्योवह्निस्तदभा ववान् जलह्रदादिस्तद्वृत्तित्वंनोकदावद्वृत्तित्वप्रकृतहेतु भूतेधूमेइतिकृत्वालक्षणसमन्वयः धूमवान्वन्हेरित्या दौसाध्योधूमस्तदभाववदयोगोलकंतद्वृत्तित्वमेववह्न्यादा वितिनातिव्याप्तिः ननुज्ञातेयंव्याप्तिः पक्षधर्मताज्ञानमि त्यत्रकानामपक्षधर्मताइत्यपेक्षमाणंप्रतितत्स्वरूपंनिरू पयति ४६॥

व्याप्यस्यपर्वतादिवृत्तित्वंपक्षधर्मता ४७

टी॰ व्याप्यजोधूमादिउनकापर्वतादिकोमैंरहनापक्षधर्मता कहातीहै अग्नीधूमकोछोड़के अधिकदेशमैंरहनेसैं व्यापक

कहाताहैं औरव्यापकसेंहीसाध्यकहतेहैं औरअग्निको छोड़कर धूम अधिकदूसरीजगह नहीं रहताहै किन्तुअग्नि की अपेक्षासें न्यूनजगह रहताहै इसीसें व्याप्य कहाताहै और उसी सें साधन कहतेहैं ४७

टी० व्याप्यस्येति व्याप्योनाम व्याप्त्याश्रयः सच धूमादिरेवत स्यपर्वतादिनिरूपितत्वंनिर्त्वंपक्षधर्मतेत्यर्थः अथ कथमनुमानमनुमितिकरणं कथंवातस्मादनुमितेर्जनिरितिजिज्ञासमानंप्रतिलाघवादनुमानंविभागमुखेनैवात्वबोधयितुमनुमानंविभजते ४७

अनुमानंद्विविधंस्वार्थं परार्थंच स्वार्थं स्वानुमितिहेतुः तथाहि स्वयमेवभूयो भूयोदर्शनेनयत्रयत्र धूमस्तत्राग्निरिति ४८

टी० अनुमानप्रमाणदोप्रकारकाहै एकस्वार्थदूसरापरार्थ अपनेलियेंजो अनुमितीज्ञानउसकाहेतुहै सोस्वार्थ कहाताहै जैसें प्रसिद्ध है कि आपहीसें आपवारवार देखनेसेजहां२ धूमहै तहां२ अग्निहै इसतरह परसोंई केस्थानादिकमें व्याप्तिनिश्चयकरकोई तरहसें पर्वतकेसमीपप्राप्तहो पर्वत में अग्निहै किनहीं ऐसे संदेह कोकरना हुआ पर्वत में धूमको देखकर व्याप्तिकास्मरणकरताहै किजहांपरधूम होताहै वहीं पर अग्निजरूर होतीहै ॥ ४८ ॥

टी० अनुमानमितिद्वैविध्यंदर्शयति स्वार्थंपरार्थंचेतिस्वस्यार्थः प्रयोजनंयस्मात् तत्स्वार्थमितिसमासः स्वप्रयोजनंचस्वस्यानुमेयप्रतिपत्तिः एवंपरार्थमित्यस्यापि ४८॥

महानसादौव्याप्तिंगृहीत्वापर्वतसमीपंगत्वा तद्गतेचाग्नौसंदिहानः पर्वतेधूमं पश्यन् व्याप्तिं स्मरति यत्रधूमस्तत्राग्निरितितदनंतरं वन्हि

व्याप्यधूमवानयंपर्वतइति ज्ञानमुत्प
द्यते अयमेवलिङ्गपरामर्श इत्युच्यते
तस्मात्पर्वतोवह्निमानिति ज्ञानमनुमि
तिरुत्पद्यते तदेतत्स्वार्थानुमानं ४९

टी॰ तिसपीछे वन्हिका व्याप्य जो धूम उसवाला यह पर्वत है इसतर
हका ज्ञान होता है इसी ज्ञानसे लिंगपरामर्श कहते हैं इसलिये पर्वत
अग्निवाला है ऐसा अनुमिति रूपज्ञान इसी परामर्शज्ञानसें उत्प
न्न होता है सो स्वार्थानुमान कहाता है ४९

टी॰ अयमितिव्याप्तिवलेनलीनमर्थं गमयतीति लिंगं तच्च धू
मादिस्तस्यपरामर्शो ज्ञानविशेषइत्यर्थः तस्मादिति लिंगपरा
मर्शादित्यर्थः स्वार्थानुमानमुपसंहरति तदेतदिति यस्मादिदं
स्वप्रतिपत्तिहेतुस्तस्मादेतत्स्वार्थानुमानमित्यर्थः ॥ ४९॥

यत्तु स्वयंधूमादग्निमनुमाय परंप्रतिबोध
यितुं पञ्चावयववाक्यंप्रयुंक्ते तत्परार्थानुमा[नं]

टी॰ और जो कि आप धूमरूपहेतुसें अग्निका अनुमानकर दूस
रेके बोधके लियेपांच अवयवयुक्तवाक्य कहाजाता है सो परार्थानु
मान कहलाता है ५०॥

टी॰ क्रमप्राप्तंपरार्थानुमानमाह यत्त्विति यत्पंचावयववाक्यंतत्प
रार्थानुमानमितिसंबंधः अथावयवत्वंनामद्रव्यसमवायिका
रणंप्रतिज्ञादिषुतदसंभवात्कथमेतेऽवयवाः स्युरिति चेन्नद[नु]
मानवाक्यैकदेशत्वादवयवाइत्युपचर्यते इतिगृहाण नन्वे
वमपिपंचावयववाक्यस्यानुमानत्वमेवनविचारसहं तस्य
लिंगपरामर्शत्वाभावादिति चेन्नैवंलिंगपरामर्शप्रयोजकलिं
गप्रतिपादकत्वेनानुमानमित्युपचारमात्रत्वात् ५०

यथापर्वतो वह्निमान् धूमवत्त्वात् यो यो

धूमवान्सस्सवन्हिमान् यथामहानसं तथाचायंतस्मात्तथेति अनेनप्रतिपादि तााल्लिंगात्परोप्यग्निंप्रतिपद्यते ५१

टी॰ जैसेकिपर्वतअग्निवालाहे धूमवालाहोनेसे क्योंकिजो२ धूमवालाहोताहे सोसोअग्निवालाहोताहे जैसेरसोंईआदि कास्थानहे तैसाही यह पर्वतहे इसलिये यह पर्वततैसाहे अर्थात् धूमवालाहोनेसे अग्नि वन्हिवालाहे इसपंचअव यवसंबंध सेयुक्तकहेहुयेवाक्य रूपअनुमानसे दूसरेपु रुषकोअग्निजनायसकतेहैं ५१

टी॰ तदुदाहरति यथेति तथाचायमिति अयंचपर्वतस्तथा वन्हिव्याप्यधूमवानित्यर्थः तस्मात्तथेतिवन्हिव्याप्यधूमव त्वात् वन्हिमानित्यर्थः अनेनेति अनेनपंचावयववाक्ये ने त्यर्थः ॥ ५१ ॥

प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनानि पञ्चावयवाः पर्वतोवन्हिमानिति प्रतिज्ञा धूमवत्वादितिहेतुः योयोधूमवानित्युदा हरणं तथाचायमित्युपनयः तस्मात्तथेति निगमनं ५२॥

टी॰ प्रतिज्ञाहेतुउदाहरणउपनयनिगमनये पाँचोअवयवक हतेहैं पर्वतअग्निवालाहे यहप्रतिज्ञाकहातीहे धूमवाला होनेसे यहहेतुकहाताहे जोजोधूमवालाहे सोसोअग्निवाला है यहउदाहरणकहलाताहे तैसायहपर्वतहे यहउपनय कहाताहे इसलियेयह पर्वत तैसाहे अर्थात् धूमवालाहो नेसेअग्निवालाहे यहनिगमनकहलाताहे ५२

टी॰ ननुपंचावयववाक्यमित्यत्रकेतेपंचावयवाःअतस्तान्

र्शयति प्रतिज्ञेति प्रतिज्ञाद्यन्यतमत्वमवयवत्वं साध्यविशिष्टप क्षबोधकवचनं प्रतिज्ञा पंचम्यंतं तृतीयांतं वा लिंगवचनं हेतुः व्याप्तिप्रतिपादकदृष्टांतवचनमुदाहरणमुदाहृतव्याप्तिविशिष्ट त्वेन हेतोः पक्षधर्मता प्रतिपादकवचनमुपनयः पक्षे साध्य स्याबाधितत्व प्रतिपादकवचनं निगमनं इदमेव लक्षणं हृ दि निधाय प्रतिज्ञादीन्विशिष्य दर्शयति पर्वतो वन्हिमानित्यादिना ५२

स्वार्थानुमितिपरार्थानुमित्योर्लिङ्गप रामर्श एव कारणम् तस्माल्लिंगपराम र्शोनुमानं लिंगं त्रिविधम् अन्वयव्यति रेकि केवलान्वयि केवलव्यतिरेकिचेति

टी० स्वार्थ अनुमिति और परार्थ अनुमिति में लिंगपरामर्शही का रण होता है इसलिये लिंगपरामर्श अनुमान कहाता है लिंगपरा मर्शका स्वरूप पहिले कह आये हैं लिंग तीन प्रकार का होता है अन्वयवितरेकी १ केवलान्वयी २ केवलव्यतिरेकी ३ ॥ ५३

टी० लिंगेति ज्ञायमानं लिंगमनुमितिकरणमिति न वृद्धोक्तयु क्तमिमं यज्ञशाला वन्हिमती अतीत धूमादित्यादौ लिंगाभावे प्यनुमितिदर्शनादित्यभिप्रायवांल्लिंगपरामर्शमित्याचष्टे लिं गपरामर्श एवेति अनुमानमुपसंहरति तस्मादिति अनुमि तिकरणत्वादित्यर्थः अयमेव तृतीयज्ञानमुच्यते तथाहि म हानसादौ धूमाग्न्योर्व्याप्तौ गृह्यमाणायां यद्धूमज्ञानं तदादि सं पक्षे यद्धूमज्ञानं तत् द्वितीयं अत्रैव वन्हिव्याप्यत्वेन यत् धू मज्ञानं तत्तृतीयं इदमेव लिंगपरामर्श इत्युच्यते अनुमानमि ति व्यापारवत्कारणं करणमिति मते व्याप्तिरेवानुमानं लिंगप रामर्शो व्यापार इत्यवसेयम् ॥ ५३ ॥ ॥

अन्वयेन व्यतिरेकेण च व्याप्तिमदन्वय

व्यतिरेकि यथा बन्हौ साध्ये धूमवत्वम् यत्र धूमस्तत्राग्निर्यथा महानसमित्यन्वयव्याप्तिः यत्र वन्हि र्नास्ति तत्र धूमोपि नास्ति यथा महाह्रद इति व्यतिरेकव्याप्तिः ५४

टी० अन्वयऔर व्यतिरेकसें व्याप्तिवाला हेतु अन्वयव्यतिरेकी होताहै जैसें अग्निरूपसाध्य होनेपर धूमहेतु होताहै जहां२ धूमहोताहै वहां२ अग्निहै जैसे रसोंई आदिकास्थानहै यह अन्वयव्याप्तिकहलातीहै जहांपर अग्निनहीहै वहांपर धूम भीनहीहै जैसें जलकीदहार यह व्यतिरेकव्याप्तिकहातीहै ५४

टी० अन्वयव्यतिरेकिणोलक्षणमाह अन्वयेति तृतीयायाः प्रयोज्यत्वमर्थः साध्यसाधनयोः साहचर्यमन्वयः तदभावयोः साहचर्यंव्यतिरेकः तथाचान्वयप्रयोज्यव्याप्तिमद्व्यतिरेकप्रयोज्यव्याप्तिमदन्वयव्यतिरेकीत्यर्थः केवलव्यतिरेकिण्यतिव्याप्तिवारणायान्वयेनेति केवलान्वयिनि व्यभिचारवारणाय व्यतिरेकेणेति तथाचान्वयव्याप्तिरूपदर्शिनेव व्यतिरेकव्याप्तिश्च साध्याऽभावव्यापकीभूताभावप्रतियोगित्वमित्यर्थः तदुक्तं व्याप्यव्यापकभावोहि भावयोर्यादृगिष्यते तयोरभावयोस्तस्माद्विपरीतः प्रतीयते अन्वये साधनं व्याप्यं साध्यं व्यापकमिष्यते साध्याभावोन्यथाव्याप्यो व्यापकः साधनात्यय इति ॥ ५४ ॥

अन्वयमात्रव्याप्तिकं केवलान्वयि यथा घटोभिधेयः प्रमेयत्वात्पटवत् अत्र प्रमेयत्वाभिधेयत्वयोर्व्यतिरेकव्याप्तिर्नास्ति सर्वस्य प्रमेयत्वादभिधेयत्वाच्च ॥ ५५

टी० अन्वयमात्रसें व्याप्तिवाला केवलान्वयीकहलाताहै

जैसे घट अभिधेय अर्थात् अभिधाक है शब्दशक्तिका विषय है प्रमेय अर्थात् प्रमारूप ज्ञानका विषय होनेसे पटकी नाई यहांपर प्रमेयत्व और अभिधेयत्व इनदोनोंकी व्यतिरेकव्याप्ति नहीं है क्योंकि सब वस्तुमात्रको प्रमेय और अभिधेयरूप होनेसे व्यतिरेकमें दृष्टान्त नहीं मिलता है ५५

टी० केवलान्वयिनो लक्षणमाह अन्वयेति अन्वयेनैवव्याप्तिर्यस्मिन्सतथाप्रमेयत्वाभिधेयत्वयोर्व्यतिरेकव्याप्तिं निराकरोति अत्रेति अभिधेयत्वसाध्यकानुमान इत्यर्थः ननुकुतस्तन्निषेधोतनस्तत्रहेतुमाह सर्वस्येति सर्वस्येति पदार्थमात्रस्येत्यर्थः तथाच सकलपदाभिधेयत्वस्येश्वरप्रमाविषयत्वस्य चात्यंताभावाप्रतियोगित्वरूपकेवलान्वयित्वेन तदभावाप्रसिद्धानतद्घटितव्यतिरेकिव्याप्तिर्नसंभवत्येवेतिभावः ५५

व्यतिरेकमात्रव्याप्तिकं केवलव्यतिरेकि
यथा पृथिवीतरेभ्यो भिद्यते गन्धवत्वात्
यदितरेभ्यो न भिद्यते न तद्गन्धवत् यथा
जलम् नचेयं तथा तस्मान्न तथेति ५६

टी० और व्यतिरेकमात्रसे व्याप्तिवाला हेतु केवलव्यतिरेकी कहलाता है जैसे पृथ्वी इतर पदार्थोंसे भिन्न है गंधवाली होनेसें जो इतरपदार्थोंसे भिन्न नहीं है सो गंधवाला भी नहीं है जैसें जल है यह पृथ्वी नौ तैसा अर्थात् गंधके अभाववाला नहोनेसे इतरपदार्थ जलादिसें भिन्न है अभावसें व्यतिरेक ॥ ५६ कहते हैं यहांपर जो गंधवाला है सो इतरसे भिन्न हैं

टी० केवलव्यतिरेकिणो लक्षणमाह व्यतिरेकेति व्यतिरेकेणेव व्याप्तिर्यस्मिन्सतथा अन्वयव्यतिरेकिण्यतिव्याप्तिवा

रणायमात्रेति नचेयंतथेतिइयंचपृथिवीनतथानगंधा
भाववतीत्यर्थः तस्मान्नतथेति गंधाभाववत्त्वाभावादि
तरभेदाभाववतीनेत्यर्थः ५६

अत्र यद्गन्धवत्तदितरभिन्नमित्यन्वयदृष्टा
न्तोनास्ति पृथिवी मात्रस्य पक्षत्वात् ५७

टी० इहांपरजोगंधवालीहै वहपृथवीसेंभिन्नहैइसप्रकार
के अन्वयमेंअमुकेकीतरह इसप्रकारका दृष्टान्तनहीहै
क्योंकि सबपृथ्वीमात्रहीपक्षहै ५७

टी० नन्वत्रकिमितिनान्वयव्याप्तिरित्याशंकापरिहरतिअ
त्रेति इतरभेदसाधकानुमानइत्यर्थः इदमुपलक्षणंजी
वत् शरीरंसात्मकंप्राणादिमत्वात् यन्नैवंतन्नैवंयथाघटः
प्रत्यक्षादिकंप्रमाणमितिव्यवहर्तव्यंप्रमाकरणत्वात् य
न्नैवंतन्नैवंयथाप्रत्यक्षाभासः विवादास्पदमाकाशमि
तिव्यवहर्तव्यंशब्दवत्वादित्यादिकमपिकेवलव्यतिरे
कीतिद्रष्टव्यं अथपृथिवीमात्रस्यपक्षत्वादित्यत्रकिंनाम
पक्षत्वमित्यपेक्षायांतंनिर्वक्ति ५७

सन्दिग्धसाध्यवान्पक्षः यथा धूमवत्त्वे
हेतौपर्वतः निश्चितसाध्यवान्सपक्षः य
था तत्रैव महानसः निश्चितसाध्याभाववा
न्विपक्षः यथा तत्रैवमहाह्रदः ॥ ५८।

टी० संशययुक्तसाध्यवालापक्षकहलाताहै जैसेधूमरू
पहेतुहोनेपरयह पर्वतहै औरसाध्यकेनिश्चेवालासप
क्षकहलाताहै जैसेवहीधूमहेतुहोनेपररसोंईआदिका
स्थानहै दृष्टान्तसेसपक्षकहतेहैं निश्चेकरसाध्यके अभा
ववाला विपक्ष कहलाताहै जैसेउसीधूमकोहेतुहोनेपरजलकी

टी॰ संदिग्धेति सपक्षवारणाय संदिग्धेति निश्चितेति पक्षे तिव्याप्तिवारणाय निश्चितेति तत्रैवेति धूमवत्त्वे हेतावित्यर्थः साध्येति सपक्षेतिव्याप्तिवारणाय साध्येति पक्षेतिव्याप्तिवारणाय निश्चितेति अत्रेदं बोध्यं अन्वयव्यतिरेकि तु पंचरूपोपपन्नं स्वसाध्यं साधयितुं क्षमते तानि कानीति चेत् श्रूयतां पक्षधर्मत्वं सपक्षे सत्त्वं विपक्षाद्व्यावृत्तिः अबाधितविषयत्वं असत्प्रतिपक्षत्वं चेति अबाधितः साध्यरूपो विषयो यस्य तत्तथोक्तं तस्य भावस्तत्त्वं एवं साध्याभावसाधकं हेत्वंतरं यस्य स सत्प्रतिपक्ष इत्युच्यते स नास्ति यस्य सोऽसत्प्रतिपक्षस्तस्य भावस्तत्त्वमिति बोध्यं केवलान्वयि तु चतूरूपोपपन्नमेव स्वसाध्यं साधयितुं क्षमते तस्य विपक्षविपर्ययेण तद्व्यावृत्तिविपर्ययात् केवलव्यतिरेक्यपि तथा तस्य सपक्षविपर्ययेण तत्सपक्षत्वविपर्ययादिति हेतुनिरूप्य हेत्वाभासानाह ५८

सव्यभिचारविरुद्धसत्प्रतिपक्षासिद्धबाधिताः पञ्चहेत्वाभासाः सव्यभिचारोनैकान्तिकः सत्रिविधः साधारणासाधारणानुपसंहारिभेदात् ५९

टी॰ सव्यभिचार १ विरुद्ध २ सत्प्रतिपक्ष ३ असिद्ध ४ बाधित ५ यह पांचों हेत्वाभास कहलाते हैं अनैकान्तिक सैं व्यभिचारक ५९ हते हैं सो तीन भांति का है साधारण १ असाधारण २ अनुपसंहारी ३

टी॰ सव्यभिचारेति उपदर्शितरूपाणां मध्ये कतिपयरूपोपपन्नत्वाद्धेतुवदाभासंते इति हेत्वाभासः तत्त्वं चानुमितितत्करणान्यतरप्रतिबंधकयथार्थज्ञानविषयत्वं बाधस्थले वह्निरनुष्ण इत्यनुमितिप्रतिबंधकं यत् ज्ञानसुष्णत्ववद्

न्हावत्नुष्मत्वसाधकंद्रव्यत्वमित्याकारकं नह्विषयत्वस्यवि षयतासंबंधेनद्रव्य त्वरूपहेत्वाभासेसत्वाल्लक्षणसमन्व यः सद्धेतुवारणाययथार्थेति घटादिवारणाय अनुमिति तत्करणप्रतिबंधकेतिव्यभिचारिणि अव्याप्तिवारणाय तत्करणान्यतरेति ५९

तत्र साध्याभाववद्वृत्तिः साधारणोनैका न्तिकः यथा पर्वतो वन्हिमान्प्रमेयत्वादिति प्रमेयत्वस्य वन्ह्यभाववति ह्रदे विद्यमान त्वात् सर्वसपक्षविपक्षव्यावृत्तोसाधारणः यथा शब्दो नित्यः शब्दत्वादिति शब्दत्वं स वेभ्यो नित्येभ्योनित्येभ्यश्च व्यावृत्तं शब्दमा

टी० तहांपरसाध्यकेअभाववालेमेंरहनेवालाहेतुसाधारण अनेकान्तिककहलाताहै जैसेंपर्वतअग्निवालाहै प्रमेयरूपहो नेसेंक्योंकि प्रमेयत्वरूपहेतुअग्निके अभाववालेजलदहारमें भीरहताहै सर्वसपक्षऔरविपक्षमेंनरहनेवालाअसाधारण कहलाताहै जैसेशब्दनित्यहै शब्दत्ववालाहोनेसेयहांपरशब्द त्वरूपहेतुशब्दमात्रमेंरहनेसे संपूर्णनित्यअनित्यसपक्षऔर विपक्षमें नहीं रहता ६० ॥ ५ ॥

टी० तत्रेतिसाधारणादित्रितयमध्यइत्यर्थः अथ विरुद्धे तिप्रसक्तिरितिमास्मदर्थः सपक्षवृत्तित्वस्यापिनिवेशात् अथैवमपिस्वरूपासिद्धे दूषणंजागर्तीतिभावेहगर्वपक्ष वन्नित्वस्यापितथात्वात् पक्षमात्रेतिसर्वेयेसपक्षाविपक्षा स्तेभ्योव्यावर्तत इतिविपक्षसपक्षव्यावृत्तः केवलव्यतिरे किवारणायतद्भिन्नइत्यपिदेयं ६०

अन्वयव्यतिरेकदृष्टान्तरहितोनुपसंहारी

यथा सर्वमनित्यं प्रमेयत्वादिति अत्र सर्वस्यापि पक्षत्वाद्दृष्टान्तो नास्ति साध्याभावव्याप्योहेतुर्विरुद्धः यथा शब्दो नित्यः कृतकत्वादिति कृतकत्वं हि नित्यत्वाभावेनानित्यत्वेन व्याप्तम् ६१ ॥

टी० अन्वयऔरव्यतिरेकदृष्टान्तसेहीनअनुपसंहारीहोताहै जैसेसबअनित्यहै प्रमेयरूपहोनेसेयहांपरसबकोपक्षहोनेसेदृष्टान्तनहींमिलताहै साध्यकेअभावसेसंयुक्तहेतुविरुद्धकहलाताहै जैसेशब्दनित्यहैकृतकत्वयानिकार्यरूपहोनेसेयहांपरकृतकत्वरूपहेतुनित्यपनेकेअभावअनित्यपनेसेव्याप्तयानेसंयुक्तहै ६१॥

टी० अन्वयेतिकेवलान्वयिन्यतिव्याप्तिवारणायअन्वयेतिकेवलव्यतिरेकिवारणायव्यतिरेकेतिअत्रेतिउपदर्शितानुमानेइत्यर्थः विरुद्धंलक्षयति साध्येति सद्धेतुवारणायसाध्याभावव्याप्तइतिसत्प्रतिपक्षवारणायसत्प्रतिपक्षभिन्नइत्यपिबोध्यं कृतेतिकार्यत्वादित्यर्थः कृतकत्वमितिअनित्यत्वेनव्याप्तमितियद्यत् कृतकं तत्तदनित्यमितिव्याप्तिर्भवत्येवनत्वेतिभावः ६१

साध्याभावसाधकं हेत्वन्तरं यस्य स सत्प्रतिपक्षः यथाशब्दो नित्यः श्रावणत्वाच्छब्दत्ववदिति शब्दोनित्यः कार्यत्वाद्घ

टी० साध्यकेअभावकोसिद्धजानेसावितकरनेवालादूसराहेतुजिसकावैरीकीतौरपरमौजूदहोवै वहसत्प्रतिपक्षकहलाताहै जैसेशब्दनित्यहैश्रावण अर्थात् श्रोत्रइन्द्रियकाविषयहोनेसेशब्दत्वकेतौरपर औरशब्दअनित्यहैकार्यहोनेसेघटके

तौरपरयहांपरशब्दमेंनित्यत्ता औरअनित्यतारूपसाध्यके अभावकोसाबितकरनेहारा श्रावणत्व और कार्यत्वहेतु आपुसमें सत्प्रतिपक्षहोनेहैं ६२

टी० सत्प्रतिपक्षंलक्षयति साध्येतियस्येतियस्य हेतोः साध्याऽभावसाधकं साध्याभावस्यानुमापकं हेत्वंतरं प्रतिपक्षहेतुः विद्यते स सत्प्रतिपक्ष इत्यर्थः अयमेव प्रकरणसम इत्युच्यते विरुद्धवारणाय हेत्वंतरं यस्येति वन्ह्यादि साध्यवारणाय साध्याऽभावेति ६२

असिद्धस्त्रिविधः आश्रयासिद्धः स्वरूपासिद्धो व्याप्यत्वासिद्धश्चेति आश्रयासिद्धो यथा गगनारविन्दं सुरभ्यरविन्दत्वात् सरोजारविन्दवत् अत्र गगनारविन्दमाश्रयः स च नास्त्येव ६३ ॥

टी० असिद्धभी तीन प्रकारका है १ आश्रयसें असिद्ध १ स्वरूपसें असिद्ध २ व्याप्यत्वसें असिद्ध ३ आश्रयसें असिद्ध वह कहलाता है कि जिसका आश्रय गलत हो जैसे कि गगनका कमल सुगंधवाला है कमल होनेसे तलावके कमलकी नांई यहांपर आकाशका कमल आश्रय है सो नहीं है इसलिये अरविंदत्व रूपहेतु आश्रयसे असिद्ध है ६३

टी० असिद्धं विभजते असिद्धइति आश्रयासिद्धाद्यन्यतमत्वमसिद्धत्वं आश्रयासिद्धत्वं च पक्षे पक्षतावच्छेदकाभाववत्वं भवति हि अरविंदे गगनीयत्वरूपपक्षतावच्छेदकाभाववत्वं अरविंदत्वरूपपक्षे गगनीयत्वविरहात् ननु किमरविंदे गगनीयत्वविरहो न आह अत्रेति उपदर्शितानुमान इत्यर्थः ६३

स्वरूपासिद्धो यथा शब्दो गुणश्चाक्षुषत्वात् अत्र चाक्षुषत्वं शब्दे नास्ति शब्दस्य श्रावणत्वात् ६४

टी॰ स्वरूपसे असिद्ध हेतु वह कहलाता है जो कि आपही गलत हो जैसे शब्द गुण है चाक्षुत्ववाला अर्थात् नेत्रसे जानने योग्य होनेसे यहां पर चाक्षुषत्वरूप हेतु शब्दमे अपने स्वरूपसे नहीं है क्योंकि वह नेत्रमें जानने योग्य घटादिमें रहता है शब्दमे तो श्रावणत्व रहता है जिसलिये शब्दका श्रवण इन्द्रियसेही प्रत्यक्ष होता है ६४

टी॰ पक्षेति सद्धेतुभावेतिव्याप्तिवारणाय पक्षेति घटादिअभाववारणायहेत्विति सोयं स्वरूपासिद्धः शुद्धासिद्धं भागासिद्धविशेषणासिद्धविशेष्यासिद्धभेदेन चतुर्विधः तत्राद्यस्तूपदर्शितो द्वितीयो यथा उद्भूतरूपादिचतुष्टयं गुणः रूपत्वादित्यत्र रूपत्वहेतोः पक्षैकदेशावृत्तित्वेन तस्य भागे स्वरूपासिद्धत्वं तृतीयो यथा वायुः प्रत्यक्षः रूपवत्त्वे सति स्पर्शवत्त्वादित्यत्र रूपवत्त्वविशेषणस्य वायाववृत्तेस्तद्विशिष्टस्पर्शवत्त्वेपि तथात्वेन तस्य स्वरूपासिद्धत्वं निर्वहति विशेषणाभावे विशिष्टस्याप्यभावात् तुरीयो यथा अत्रैव विशेषणविशेष्यवैपरीत्येन हेतुः तस्य स्वरूपासिद्धत्वन्तु विशेष्याभावप्रयुक्त विशिष्टाभावादिति बोध्यम्॰ ६४

सोपाधिको हेतुर्व्याप्यत्वासिद्धः साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वमुपाधिः साध्यसमानाधिकरणात्यन्ताभावाप्रतियोगित्वं साध्यव्यापकत्वम् ६५

टी॰ और व्याप्यत्वसे असिद्ध वह कहलाता है जो कि उपाधियुक्त होता है साध्यका व्यापक हो साधनका व्यापक न हो सो उपाधी कहलाता है साध्यके साथ एक आश्रयमें रहनेवाला जो अत्यंत अभाव उसका प्रतियोगी न हो सो साध्यका व्यापक कहलाता है और साधनवालेमें रहनेवाला जो अत्यंत अभाव उसका प्रतियोगी सो साधनका अव्यापक कहलाता है ६५

टी० व्याप्यत्वासिद्धं निरूपयति सोपाधिक मिति ननु कोयमुपा धिरत आह साध्येति साधनाव्यापकउपाधिरित्युक्ते शब्दो ऽनित्यः कृतकत्वादित्यत्रसामान्यवत्वे सत्यस्मदादिबाह्येन्द्रियग्रहणार्हत्वमप्युपाधिः स्यात्तदर्थं साध्यव्यापकत्वेत्युक्ते तावत्युक्ते सामान्यवत्वादिना ऽनित्यत्वसाधने कृतकत्वमुपाधिः स्यात्तदर्थं साधनाव्यापक इत्युक्तं उपाधिभेदमादायासंभववारणाय व्यापकत्वशरीरेप्यत्यंतपदं साधनभेदमादाय साधनस्योपाधित्ववारणायाव्यापकशरीरेप्यत्यंतपद मावश्यकं देयं ६५

साधनवन्निष्ठात्यन्ताभावप्रतियोगित्वं साधनाव्यापकत्वम् पर्वतो धूमवान्वन्हिमत्वादित्यत्रार्द्रेन्धनसंयोग उपाधिः तथाहि यत्र धूमस्तत्रार्द्रेन्धनसंयोग इतिसाध्यव्यापकता यत्रवन्हिस्तत्रार्द्रेन्धनसंयोगोनास्ति अयोगोलके आर्द्रेन्धनसंयोगाभावादिति साधनाव्यापकता एवं साध्यव्यापकत्वे सति साधनाव्यापकत्वादार्द्रेन्धनसंयोग उपाधिः सोपाधिकत्वाद्वन्हिमत्त्वं व्याप्यत्वा

टी० जैसेपह पर्वत धूमवालाहै अग्निवालाहोनेसे यहांपरगीलेईंधनकासंयोगउपाधीहै यहांपरधूमहै वहांपरगीलेईंधनका संयोगहै इसलियेवह संयोगरूपउपाधी धूमरूपसाध्यका व्यापकहै औरजहांपरअग्निहै वहांपरगीलेईंधनकासंयोगनहीहै क्योंकि तपेहुयेलोहेकेपिंडमेंगीलेईंधनकाअभावहै इसलियेसाधनकी अव्यापकहै इसरीतिसे साध्यकाव्यापक होनेपरसाधनकाअव्यापकगीलेईंधनकासंयोगउपाधीहोताहै उपाधिसंयुक्त होनेसे अग्निरूपहेतुव्याप्यत्वसे असिद्धहै ६६

टी० उपाधिस्त्रिविधः केवलसाध्यव्यापकः पक्षधर्मावच्छि
न्नसाध्यव्यापकः साधनावच्छिन्नसाध्यव्यापकश्चेति तत्रा
द्यउपदर्शितः एवं क्रत्वंतर्वर्तिनी हिंसाधर्मजनिका हिंसा
त्वात् क्रतुबाह्यहिंसावदित्यत्रनिषिद्धत्वमुपाधिस्तस्ययत्रा
धर्मजनकत्वंतत्रनिषिद्धत्वमितिसाध्यव्यापकतायत्रहिंसा
त्वंतत्रननिषिद्धत्वमितिनिषिद्धत्वमुपाधिसाधनाव्यापकः
क्रतुहिंसायांनिषिद्धत्वस्याभावात् नहिंस्यात्सर्वाभूतानीति
सामान्यवाक्यतः पशुनायजेदित्यादिविशेषवाक्यस्यबली
यस्त्वात् अतोहिंसात्वंनाधर्मजनकत्वप्रयोजकमपितुनि
षिद्धत्वमेवेत्यादिकमपिद्रष्टव्यं द्वितीयोयथावायुः प्रत्यक्षः
प्रत्यक्षस्पर्शाश्रयत्वादित्यत्रोद्भूतरूपवत्वमुपाधिः तस्यय
त्रप्रत्यक्षत्वंतत्रोद्भूतरूपवत्वमितिनकेवलसाध्यव्यापक
त्वंरूपेव्यभिचारात् किंतुद्रव्यत्वलक्षणोयःपक्षधर्मस्तद
वच्छिन्नवहिः प्रत्यक्षत्वंयत्रतत्रोद्भूतरूपवत्वमितिपक्षध
र्मावच्छिन्नसाध्यव्यापकत्वमेवआत्मनिव्यभिचारवारणा
यवहिः पदंयत्रप्रत्यक्षस्पर्शाश्रयत्वंतत्रनोद्भूतरूपवत्वमि
तिसाधनाव्यापकत्वंचवायावुद्भूतरूपविरहात् तृतीयोयथा
प्रागभावोविनाशीजन्यत्वादित्यत्रभावत्वमुपाधिः तस्यय
त्रविनाशित्वंतत्रभावत्वमितिनकेवलसाध्यव्यापकत्वंप्रा
गभावेभावत्वविरहात् किंतुजन्यत्वरूपसाधनावच्छिन्नवि
नाशित्वंयत्रतत्रभावत्वमितिसाधनावच्छिन्नसाध्यव्यापक
त्वमेवयत्रजन्यत्वंतत्रनभावत्वमितिसाधनाव्यापकत्वंध्व
सेभावत्वविरहात् एवंसश्यामोमित्रातनयत्वादित्यत्रशाक
पाकजन्यत्वमुपाधिः श्यामत्वस्यनीलघटेपिसत्वात् नके
वलसाध्यव्यापकं किंतुसाधनावच्छिन्नसाध्यव्यापकत्वमे
वअष्टमेपुत्रेशाकपाकजन्यत्वविरहेणसाधनाव्यापक
त्वंचेत्यादिकमपिद्रष्टव्यं ६६

यस्य साध्याभावः प्रमाणान्तरेण निश्चितःस बाधितः यथा वन्हिरनुष्णो द्रव्यत्वादिति अत्रानुष्णत्वं साध्यं तदभाव उष्णत्वं स्पार्शनप्रत्यक्षेण गृह्यते इति बाधितत्वम् उपमितिकरणमुपमानम्· ६७ ॥

टी०जिसहेतुकेसाध्यकाअभावदूसरेकोई प्रमाणसेनिश्चैकियाजायवहहेतुबाधितकहलाताहै जैसेअग्निअनुष्ण अर्थात् गरमनहीहै द्रव्यत्वरूपधर्मवालाहोनेसे यहांपर अनुष्णता याने शीतलतारूपसाध्यअर्थात् सिद्धकरनेकेयोग्यहै उसकाअभावउष्णता अर्थात् तातापनहै सोप्रत्यक्षरूप दूसरे प्रमाण सेग्रहण कियाजाताहै इसलिये द्रव्यत्वरूप हेतुबाधितहै इतिबाधित अनुमानकाव्याख्यानकरचुके ६७॥

टी०यस्येतिसद्धेतुवारणाय प्रमाणांतरेणेतिपक्षादिवारणाय साध्येति इतिपदकृत्यकेऽनुमानखंडः ६७॥

संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानमुपमितिःतत्करणं सादृश्यज्ञानम् अतिदेशवाक्यार्थस्मरणमवान्तरव्यापारः तथाहि गवयशब्दवाच्यमजानन्कुतश्चिदारण्यकपुरुषाद्गोसदृशो गवय इति श्रुत्वा वनं गतो वाक्यार्थं स्मरन्गोसदृशं पिण्डं पश्यति तदनन्तरमसौ गवयशब्दवाच्य इत्युपमितिरुत्पद्यते ६८ ॥

टी०उपमितिज्ञानकाकरणउपमाप्रमाणहोताहै संज्ञाऔरसंज्ञिकेसंबंधकाज्ञानउपमितिकहातीहै संज्ञानामसे औरसंज्ञिनामवालेसेकहतेहैं उसउपमितिज्ञानकाकरणसादृश्यज्ञानहोताहै जैसेकोईपुरुषगवय अर्थात् रोजशब्दकेअर्थकोनजानताहुआकोई एकजंगलीमनुष्यसे सुनाकि गायके समानगवयपदकावाच्यार्थयानेरोजहोताहै फिरदैववससे वनमें प्राप्तहो

सुनेहुयेवाक्यके अर्थकास्मरणकरताहुआ गायकेसमानजा नवरकोदेखतासके अनंतर यहगवयपदकावाच्यार्थहै इ सतरहकाउपमितिज्ञानउत्पन्नहोताहै वाचक शब्दहोताहै औरवाच्यउसकाअर्थहोताहै इतिउपमान समाप्तम् ६६

टी० अवसरसंगतिमभिप्रेत्यानुमानानंतरमुपमानंनिरू यति उपमितीतिउपमितेःकरणमुपमानमित्यर्थःकण्ठाए दिवारणायमितीति प्रत्यक्षादिवारणायउपेतिसंज्ञासंज्ञीति अनुमित्यादिवारणायसंबंधेति संयोगादिवारणायसंज्ञा संज्ञीति अयंगवयपदवाच्यइतिअभिप्रेत्यगवयोगवयप दवाच्यइत्यर्थःतेनगवयांतरेशक्तिग्रहाभावप्रसंगइतिदू षणमपास्ततथाचगोसादृश्यविशिष्टपिंडज्ञानंकरणंअ तिदेशवाक्यार्थस्मरणमवांतरव्यापारःउपमितिफलमि तिसारःतच्चोपमानंत्रिविधंसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानम साधारणधर्मविशिष्टपिण्डज्ञानंवैधर्म्यविशिष्टपिंडज्ञानं चतत्राद्यमुक्तमेवद्वितीयं यथाखड्गमृगःकीदृगितिपृष्टेना सिकालसदेकशृंगोतिक्रांतगजाकृतिश्चेततज्ज्ञात्वाभ्यःश्रु त्वाकालांतरेताहशंपिंडंपश्यन्नतिदेशवाक्यार्थंस्मरतितद नंतरंखड्गःमृगःखड्गमृगपदवाच्यउपमितिरुत्पद्यते अत्र नासिकालसच्छृंगमेवासाधारणधर्मःतृतीयंयथाउष्ट्रः कीदृगितिपृष्टेऽश्वादिवदसमानएष्टोनहृस्वग्रीवशरीरश्चे तिआप्तोक्तेकालांतरेतत्पिंडदर्शिनाहैधर्म्यविशिष्टपिंड ज्ञानं ततोऽतिदेशवाक्यार्थस्मरणंततउष्ट्रउष्ट्रपदवाच्यइत्यु पमितिरुत्पद्यते इतिपदकृत्यकेउपमानखंडःसमाप्तम् ६६

आप्तवाक्यं शब्दः आप्तस्तु यथार्थवक्तावाक्यं पदसमूहःयथा गामानयेति शक्तं पदम् ६९

टी० आप्तपुरुषकावाक्यशब्दप्रमाणकहाताहै औरयथार्थ

क्तासें आप्तकहतेहैं यथार्थवक्तावहकहाताहै जोकिजैसाअर्थया नेवस्तुहै उसीतरहपरउसेप्रमाणोंसेनिश्चयकरपक्षपातयानेतर फदारीकोछोड़करकहताहै पदोंकासमूहवाक्यकहलाताहै जैसेगायलेआवो इत्यादिशक्तअर्थात् शक्तिकाआश्रयपदकहलाताहै६९

अवसरसंगतिमभिप्रेत्योपमानानंतरंशब्दंनिरूपयतिआप्तेति शब्दइतिशब्दःप्रमाणमित्यर्थः भ्रांतविप्रलंभकयोर्वाक्यस्यशब्दप्रमाणत्ववारणाय आप्तेति ननुकोयमाप्तइत्यतआह आप्तस्त्विति यथार्थवक्तायथाभूताबाधितार्थोपदेष्टाघटादिसमूहवारणायपदेति शक्तमितिनिरूपकत्वासंबंधेनशक्तिविशिष्टमित्यर्थः ६९

अस्मात्पदादयमर्थो बोद्धव्य इतीश्वरेच्छा संकेतः शक्तिः आकांक्षायोग्यता सन्निधि श्च वाक्यार्थज्ञानहेतुः पदस्य पदान्तरव्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वमाकांक्षा. अर्थाबाधो योग्यता पदानामविलम्बेनोच्चा ७०

टी॰ इसपदसेयहअर्थजानना चाहियेइसतरहपरईश्वरकेसंकेतयानेमर्यादाकोशक्तिकहतेहैं आकांक्षायोग्यताऔरसंनिधिवाक्यार्थज्ञानमेहेतुहै एकपदनेदूसरेपदकेविनाअन्वयबोधनकरना आकांक्षाकहातीहैं पदार्थोंकेसंबंधसें अन्वय कहतेहैं पदोंके उच्चारण मेंविलंबनहोनासंनिधि कहलातीहै ॥ ७० ॥

टी॰ अस्मादिति घटपदात् घटरूपोर्थोबोद्धव्यइतिईश्वरेच्छैवशक्तिरित्यर्थः अर्थस्मृत्यनुकूलपदपदार्थसंबंधत्वंतल्लक्षणंशक्तिरिवलक्षणापिपदस्यवृत्तिः अथकेयंलक्षणा शक्यसंबंधोलक्षणासाचत्रिधाजहदजहत्जहदजहद भेदात् वर्त्ततेच गंगायांघोषइत्यत्रगंगापदस्यशक्यप्रवाहसंबंधस्तीरेलक्षणाबीजचतात्पर्यानुपपत्तिः अतएव

प्रवाहे घोषतात्पर्यानुपपत्त्या तीरे लक्षणा सेत्स्यति छत्त्रिणो यां तीत्यादौ द्वितीया सोयमश्व इत्यादौ तृतीया असंभववारण यपदस्येति पुनरसंभववारणाय पदात्तरेति अर्थेति आकां क्षावारणाय अर्थेति पदानामिति असहोच्चारितेषु अति व्याप्तिवारणाय अविलंबेनेति आकांक्षावारणायपदाना मिति आकांक्षादिशून्य वाक्यस्याप्रमाणत्वं निषेधयति ७०

आकांक्षादिरहितं वाक्यं प्रमाणम् यथा गौरश्वः पुरुषो हस्तीति न प्रमाणमाकांक्षाविरहात् अग्निना सिञ्चेदि ति न प्रमाणं योग्यताविरहात् प्रहरे प्रहरे ऽसहोच्चारिता नि गामानयेत्यादिपदानि न प्रमाणं सान्निध्याभावात्

टी० आकांक्षादिरहित वाक्य प्रमाण नहीं होता जैसें गाय घो डा पुरुष हस्ति इत्यादि वाक्य प्रमाण नहीं है क्योंकि आकांक्षाका अभाव है अग्निसें सींचो इत्यादि वाक्य भी प्रमाण नहीं हैं क्योंकि यो ग्यताका अभाव है पहर २ मे कहे गये जो कि गाय ले आओ इत्यादि पद सो प्रमाण नहीं होते इसलिये कि संनिधिका अभाव है ॥ ७१ ॥

टी० तथा चेति आकांक्षादिकं शब्दहेतुरित्युक्ते चेत्यर्थः यथे ति अनाकांक्षाद्युदाहरणं दर्शयति नन्वेतावता शाब्दसामग्री प्रपंचिता प्रमाविभाजक वाक्ये शाब्दस्याप्तिदिष्टत्वेन तत्कुतो न प्रदर्शितमित्यत आह ७१

वाक्यं द्विविधम् वैदिकं लौकिकं च वैदिक मीश्वरोक्तत्वात्सर्वमेव प्रमाणम् लौकिकं त्वाप्तोक्तं प्रमाणम् अन्यद प्रमाणम् वा क्यार्थज्ञानं शाब्दज्ञानम् तत्करणं शब्दः ७२

टी० वाक्य दो प्रकारका है एक वैद्यक दूसरा लौकिक जो वेद में हो वह वैद्यक और जो लोक में हो वह लौकिक वैद्यक तो ईश्वरने कहा है इसलिये संपूर्ण प्रमाण है और लौकिक आप्तपुरुषका कहा हुआ

प्रमाण है सिवाय इसके और सब वाक्य प्रमाण है वाक्य के अर्थ का ज्ञान शाब्दज्ञान कहाता है उसका करण शब्द है इति शब्दप्रमाण यथार्थ अनुभव निरूपण करचुके ७२

टी० वाक्यंहीति शाब्दत्वं च शब्दात् प्रत्येमीत्यनुभवसिद्धा जातिः शाब्दबोधक्रमो यथा चैत्रो ग्रामं गच्छतीत्यत्र ग्रामकर्मक गमनानुकूलवर्त्तमानकृतिमानिति शाब्दबोधः द्वितीयायाः कर्मत्वमर्थः धातोर्गमनमनुकूलत्वं च संसर्गमर्यादयाभासते लटो वर्त्तमानत्वमाख्यातस्य कृतिः तत्संबंधः संसर्गमर्यादयाभासते रथो गच्छतीत्यत्र गमनानुकूलव्यापारवान् रथ इति शाब्दबोधः स्नात्वा गच्छतीत्यत्र गमनप्रागभावावच्छिन्नकालीनस्नानकर्त्ता गमनानुकूलवर्त्तमानकृतिमानिति शाब्दबोधः क्त्वाप्रत्ययस्य कर्त्ता पूर्वकालीनत्वं चार्थः एवमन्यत्रापि वाक्यार्थो बोध्यः अयथार्थानुभवं विभजते ७२

अयथार्थानुभवस्त्रिविधः संशयविपर्ययतर्कभेदात् एकस्मिन्धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहि ज्ञानं संशयः यथा स्थाणुर्वा पुरुषो वेति ७३

टी० अयथार्थ अनुभव तीन प्रकार का है एक संशय दूसरा विपर्यय अर्थात् उलटा और तीसरा तर्क एक धर्मी अर्थात् आश्रय में विरुद्ध नाना धर्मों का संबंध का ज्ञान संशय होता है जैसे एक वस्तु में यह खंभा अथवा पुरुष है ऐसा ज्ञान होता है इससे संशय कहते हैं ७३

टी० अयथार्थेति संशयं लक्षयति एकस्मिन्निति एकस्मिन्धर्मिणि एकस्मिन्नेव परावर्त्तिनि पदार्थे विरुद्ध अधिकरणायेनानाधर्माः स्थाणुत्वपुरुषत्वादयस्तेषां वैशिष्ट्यसंबंधः तदवगाहि ज्ञानं संशय इत्यर्थः घटपटाविति समूहालंबनज्ञानस्य घटत्वपटत्वरूपविरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहित्वादतिप्र

सन्निवारणाय एकस्मिन्निति घटः पृथिवीतिज्ञानस्यैकस्मि
न्धर्मिणि घटे घटत्वपृथिवीत्वरूपनानाधर्मवैशिष्ट्यावगा
हित्वादति प्रसंगवारणाय विरुद्धेति पटत्वविरुद्धघटत्व
वान् घट इति ज्ञानेति प्रसक्तिवारणयनानेति ७३

मिथ्याज्ञानं विपर्ययः यथा शुक्ताविदं
रजतमिति आप्यारोपेण व्यापकारोपस्त
र्कः यथा यदि वन्हिर्न स्यात्तर्हि धूमोपि
न स्यादिति स्मृतिरपि द्विविधा यथार्था
अयथार्था च प्रमाजन्या यथार्था अप्रमा
जन्या अयथार्था ७४ ॥

टी० मिथ्याज्ञान विपर्यय कहाताहै जैसे सीपमें रूपेका ज्ञान
आप्यके आरोपसे आपक का आरोप होना तर्क कहलाताहै जैसे
अग्नि न होगी तो धूम भी न होगा यहां पर व्याप्य अग्निका अभा
व है उसके आरोपसे आपक धूमके अभावका आरोप कि
या जाताहै स्मृति भी दो प्रकारकी है एक यथार्थ दूसरी अय
थार्थ प्रमा रूप ज्ञानके संस्कारसे उत्पन्न यथार्थ दूसरी अ
है और अप्रमाज्ञानके सें अयथार्थ होती है ७४

टी० मिथ्येति यथार्थज्ञानवारणाय मिथ्येति मिथ्यार्थवारणा
य ज्ञानेनेति तर्कं लक्षयति आप्यारोपेति असंभववारणयआ
प्यारोपेति पुनरसंभववारणाय आपकारोप इत्ति अत्र वन्ह्य
भावो आप्यः धूमाभावो व्यापकः यद्यपि तर्कस्य विपर्या
त्मकत्वेन पृथग्विभागोऽनुचितः ७४ ॥

सर्वेषामनुकूलवेदनीयं सुखम्
प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम् इच्छा कामः क्रोधो द्वेषः ७५

टी० सबकोई की अनुकूल अर्थात् भलाई के तौर पर अच्छी तरह परजानवे या प्राप्त होवे योग्य सुख कहलाता है और प्रतिकूल अर्थात् बुरी तरह पर जानवे या प्राप्त होवे योग्य दुःख कहलाता है कामना से इच्छा कहते हैं क्रोध से द्वेष ७५

तथापि प्रमाणानुग्राहकत्वात् सउचितइति बोध्यः स्वप्नस्तु पुरीतद्बहिर्देशान्तर्देशयोः संधौ मिद्धानाड्यां वामनसि स्थिते दृष्टविशेषेण धातुदोषेण वा जन्यते स च मानसत्वविपर्ययैतद्भूतः सुखं निरूपयति सर्वेषामिति सर्वात्मनमनुकूलमिति वेद्यं यत्तत्सुखमित्यर्थः अहं सुखीत्यनुभवसिद्धसुखत्वजातिमद्धर्ममात्रासाधारण कारणगुणो वा सुखं शत्रुः दुःखवारणाय सर्वेषामिति प्रतिकूलेति दुःखत्वजातिमद्धर्ममात्रासाधारणकारणगुणो वा दुःखं पदकृत्यं पूर्ववत् इच्छां निरूपयति इच्छेति काम इति पर्यायः इच्छात्वजातीमतीच्छा सा द्विविधा फलेच्छा उपायेच्छा च फलं सुखादिकं उपायो यागादिः द्वेषं निरूपयति क्रोध इति द्वेषीत्यनुभवसिद्धद्वेषत्वजातिमान् द्विष्टसाधनताज्ञानजन्यगुणो वै द्वेषः प्रयत्नं निरूपयति ७५

कृतिः प्रयत्नः विहितकर्मजन्यो धर्मः निषिद्ध कर्मजन्यस्त्वधर्मः बुद्ध्यादयोष्टावात्ममात्र विशेषगुणाः बुद्धीच्छाप्रयत्नाद्विविधाः नित्या अनित्याश्च नित्या ईश्वरस्य अनित्या जीवस्य ७६

टी० और कृति से प्रयत्न कहते हैं विहित अर्थात् वेद में कहे हुये कर्मों से उत्पन्न धर्म कहाता है और निषिद्ध कर्मों से उत्पन्न अधर्म कहाता है बुद्धि आदि आठ आत्मा ही के विशेषगुण कहलाते हैं बुद्धि इच्छा और प्रयत्न यह सब नित्य और अनित्य हैं ईश्वर के नित्य और जीव के अनित्य

टी० कृतिरिति प्रयत्नत्वजातिमान्प्रयत्नः स त्रिविधः प्रवृत्तिनि

वृत्तिजीवनयोनिभेदात् इच्छाजन्यो गुणः प्रवृत्तिः द्वेषजन्यो गुणो निवृत्तिः जीवनादृष्टजन्यो गुणो जीवनयोनिः सच प्राणसंचारकारणं धर्ममाह विहितेति वेदविहितेत्यर्थः बुद्ध्यादिषट्कं स्पर्शान्ताः स्नेहः सांसिद्धिकोद्रवः अदृष्टभावनाशब्दा अमी वैशेषिका गुणाः संख्यादिरपरत्वान्तो द्रवो नैमित्तिकस्तथा गुरुत्ववेगौ सामान्यगुणा एते प्रकीर्तिताः ॥ अ घ र्मं वारणाय वेदविहितेति यागादिक्रियावारणाय कर्मजन्य इति स च कर्मनाशाज्जलस्पर्शे कीर्तनभोगन त्वज्ञानादिना नश्यति अधर्मलक्षणमाह निषिद्धेति वेदेनेत्यर्थः धर्मवारणाय वेदनिषिद्धेति निषिद्धक्रियावारणाय कर्मजन्य इति स च भोगप्रायश्चित्तादिना नश्यति एतावेवादृष्टाविति कथ्येते वासनाजन्यो वासना च विलक्षणसंस्कारः ७६

संस्कारस्त्रिविधः वेगो भावना स्थितिस्थापकश्चेति वेगः पृथिव्यादिचतुष्टयमनोवृत्तिः अनुभवजन्या स्मृतिहेतुर्भावनात्ममात्रवृत्तिः ७७

टी. संस्कार तीनप्रकारका है वेग भावना स्थितिस्थापक वेग तो पृथ्वी जल तेज वायु और मनमें रहता है अनुभवसें उत्पन्न और स्मृतिका हेतु भावना कहाता है सो आत्माहीमें रहता है ७७

टी. संस्कारं विभजते संस्कारेति सामान्यगुणात्मविशेषगुणोभयवृत्तिगुणत्वव्याप्यजातिमान्संस्कारः घटादिवारणाय गुणत्वव्याप्येति संयोगादिवारणाय आत्मविशेषगुणोभयवृत्तीति ज्ञानादिवारणाय सामान्येति द्वितीयादिपतनासमवायिकारणं वेगः रूपादिवारणाय द्वितीयादिपतनेति कालादिवारणायासमवायीति भावं लक्षयति अनुभवेति आत्मादिवारणाय प्रथमदलं अनुभवध्वंसवारणाय द्वितीयदलं ७७

अन्यथाकृतस्य पुनस्तादवस्थ्यापादकः स्थितिस्था

पकः कटादिपृथिवीवृत्तिः ७८ ॥

टी॰ अन्यथा अर्थात् और तरह से किये हुये का फिर वैसा ही स्थापन करने का हेतु स्थितिस्थापक कहलाता है सो चटाई आदिरूप पृथ्वी में रहता है ७८

टी॰ स्थितिस्थापकमाह अन्यथेति पृथिवीमात्रसमवेतसमवेतमस्करत्वव्याप्यजातिमत्त्वं स्थितिस्थापकत्वं गंधवत्त्वमादाय गंधेतिमाप्तिवारणाय संस्कारत्वव्याप्येतिभावनात्वमादाय भावनावारणाय पृथिवीसमवेतसमवेतेति स्थितिस्थापकरूपान्यतरत्वमादाय रूपवारणाय जातिरिति गुणेति द्रव्यकर्मभिन्नत्वे सतिसामान्यवान् गुणः द्रव्यकर्मणोरतिव्याप्तिवारणाय विशेषणदलं सामान्यादावतिव्याप्तिवारणाय विशेष्यदलं ॥ ७८

चलनात्मकं कर्म ऊर्ध्वदेशसंयोगहेतुरुत्क्षेपणम् अधोदेशसंयोगहेतुरपक्षेपणम् शरीरस्य सन्निकृष्टसंयोगहेतुराकुञ्चनम् विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसारणम् अन्यत्सर्वं गमनं ७९

टी॰ कर्म का लक्षण कहते हैं चलनरूप कर्म होता है और ऊंचे देश में संयोग का हेतु उत्क्षेपण कहलाता है नीचे देश में संयोग का हेतु अपक्षेपण कहाता है शरीर के समीपदेश के संयोग का हेतु आकुंचन कहाता है शरीर के दूर देश के संयोग का हेतु प्रसारण कहलाता है और सब तिरछा चलना चक्कर बांधना आदि सब गमन कहाता है ॥ ७९

टी॰ चलनेति संयोगभिन्नत्वे सति संयोगासमवायिकारणं कर्म हस्तपुस्तकसंयोगवारणाय सत्यंतं घटादिवारणाय विशेष्यदलं ऊर्ध्वेति अपक्षेपणवारणाय ऊर्ध्वेति कालादिवारणायासाधारणेत्यपि बोध्यं अधोदेशेति उत्क्षेपणवारणायाधोदेशेति कालादिवारणायासाधारणेत्यपि देयं शरीरेति प्रसारणादिवा

रणाय शरीरसन्निकृष्टेति कालादिवारणायासाधारणं देयम् विप्रकृष्टेति उत्क्षेपणादिवारणाय विप्रकृष्टेति कालादिवारणायासाधारणमप्यावश्यकं ७९

पृथिव्यादिचतुष्टयमनोमात्रवृत्तिः नित्यमेकमनेकमनुगतं सामान्यं द्रव्यगुणकर्मवृत्ति तद्द्विविधं परापरभेदात् परं सत्ता अपरं जातिर्द्रव्यत्वादिः नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका विशेषाः ८०

टी० अनेक पदार्थोंमें समवाय संबंधसे रहनेवाला नित्य और एक होवे सो सामान्य पदार्थ कहाता है सो द्रव्य गुण और कर्ममें रहता है सबसें पर सामान्य सत्ता है अपर सामान्य द्रव्यत्वादि हैं पर और अपरका अर्थ ऊपर लिख आये हैं नित्य द्रव्यमें रहनेवाले अपने स्वरूपही सें अपने आश्रयका दूसरेसें भेदज्ञानका हेतु विशेष कहाते हैं ८०

टी० नित्यमिति संयोगादिवारणाय नित्यमिति कालादिपरिमाणवारणायानेकेति अनेकानुगतत्वं च समवायेन बोध्यं तेन नात्यंताभावेतिव्याप्तिः नित्यद्रव्यवृत्तय इति घटत्वादिवारणाय नित्यद्रव्यवृत्तय इति आत्मत्व मनस्त्ववारणाय आत्मत्वमनस्त्वभिन्ना इत्यपि बोध्यं ८०

नित्यः सम्बन्धः समवायोऽयुतसिद्धवृत्तिः ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ अवयवावयविनौ गुणगुणिनौ क्रियाक्रियावन्तौ जातिव्यक्ती विशेषनित्यद्रव्ये चेति अनादिः सान्तः प्रागभाव उत्पत्तेः पूर्वं कार्यस्य ॥ ८१ ॥

टी० नित्य संबंध समवाय कहाता है सो अयुतसिद्धोंमें रहता है जिन दोनोंमेंसें एक दूसरेके आश्रित ही होके स्थित रहैं वह दोनो अयुतसिद्ध कहलाते हैं जैसे अवयव और अवयवी गुण और गुणी क्रिया और क्रियावाला जाति और व्यक्ति विशेष पदार्थ और नित्यद्रव्य हैं अनादि और सान्त अर्थात् उत्पन्न हो नाश होने

वालाप्रागभावकहलाताहै वहकार्यउत्पत्तिकेप्रथमकालमेंरहताहै

टी· नित्यइतिअकाशादिवारणायसंबंधइतिसंयोगवारणायनित्य इतिस्वरूपसंबंधवारणायतद्भिन्नइत्यपिबोध्यंप्रागभावंलक्षय ति अनादिरिति घटादिवारणायप्रथमदलंपरमाणुवारणाय द्वितीयदलंप्रनाप्रागभावःकस्मिन्कालेस्तीत्यतआह उत्पत्तेरिति कार्यस्योत्पत्तेः प्राक्स्वप्रतियोगिसमवायिकारणेवर्ततेइत्यर्थः

ध्वंसंलक्षयति ८१

सादिरनन्तः प्रध्वंस उत्पत्त्यनन्तरं कार्य्य स्य त्रैकालिकसंसर्गावच्छिन्नप्रतियोगिता कोत्यन्ताभावःयथा भूतले घटो नास्तीति ८२

टी॰ सादिअर्थात् उत्पत्तिवाला अनंत अर्थात् अविनाशीप्रध्वं सकहलाताहै सोकार्यकीउत्पत्तिकेपीछेकेकालमेहोताहै भूत भविष्य वर्त्तमान इनतीनोकालमेंरहनेवालेसंबंधसें संयुक्तहैप्र तियोगित्ताजिसकीसोअत्यंताभावकहलाताहैजिसवस्तुकाअ भावकहाजाताहैवहवस्तुउसअभावकाप्रतियोगीकहलाताहै उसमेंप्रतियोगितारूपएकधर्मविशेषरहताहै जैसेघटमेंघट त्वपटमेंपटत्वइत्यादिसोवहअत्यन्तअभावनिरूपितप्रतियोगि तात्रैकालिकसंसर्गअर्थात् संबंधयुक्तहोतीहै जैसेवायुमेंरूप काअत्यंतअभावहै उसअभावनिरूपितप्रतियोगितारूपमें होतीहै सोत्रैकालिकसंसर्गसंयुक्तहै क्योंकिवायुमेंरूपकभीन हीं रहताहै औरअत्यन्तभावकीप्रतीतीइसतरहपरहोतीहै जैसेभूतलमेंघटनहीहै वायुमेरूपनहीहैअग्निमेंरसनहीहै

टी· सादिरितिघटादिवारणायानंतइति आत्मादिवारणायसा दिरिति उत्पत्तीतिकार्यस्योत्पत्त्यनंतरंस्वप्रतियोगिसमवायिका रणेवर्ततिरित्यर्थः सचध्वस्तइतिप्रत्ययविषयः अत्यंताभावंलक्ष

यतित्रैकालिकेति त्रैकालिकत्वे सति संसर्गावच्छिन्नप्रतियोगि
ताकोऽत्यन्ताभावः ध्वंसप्रागभाववारणाय त्रैकालिकेति भेदवारणा
य संसर्गेत्यादि घटवति भूतले घटाभावस्य सत्वेपि सामग्र्यभावान्नत्व
तीत्यभावः सा च सामग्री भूतलघटसंयोगप्रागभावध्वंसान्यतरत्व
ताहृशप्रतीतिकालीनभूतलादिकमिति वा ८२

तादात्म्यसम्बन्धावच्छिन्नप्रतियोगिता
कोऽन्योन्याभावः यथा घटः पटो न भवतीति
सर्वेषां पदार्थानां यथायथमुक्तेष्वन्तर्भावा
त्सप्तैव पदार्था इति सिद्धम्· ८३

टी· तादात्म्यसंबंधसंयुक्तप्रतियोगिता है जिसकी सो अन्योन्याभा
व कहाता है इस अभावकी प्रतीति इस तरह पर होती हैं जैसें घट
जो है सो पट नहीं है और घटसें पट भिन्न है तादात्म्य वस्तुका स्वरूप
कहाता है संपूर्ण पदार्थोंका यथायोग्य कहे हुये सातों पदार्थों में ८३
अन्तर्भाव होनेसें सात ही पदार्थ हैं अधिक नहीं यह बात सिद्ध भई

टी· अन्योऽन्याभावं लक्षयति तादात्म्येति प्रागभावप्रध्वंसाभाववा
रणाय तादात्म्येति अत्यन्ताभाववारणाय तादात्म्यत्वेन तादात्म्यसंबं
धो विशेषणीयः ८३

कणादन्यायमतयोर्बालव्युत्पत्तिसिद्धये॥
अन्नंभट्टेन विदुषा रचितस्तर्कसंग्रहः ८४
इति अन्नंभट्टविरचितस्तर्कसंग्रहः सम्पूर्णः

टी· तहां पर अन्नंभट्ट कहते हैं कि कणाद अर्थात् वैशेषिक और न्याय
इन दोनों मतमें बालकोंके प्रवेशके लिये हमने इस तर्कसंग्रह ग्रंथ
की रचना करी सर्वज्ञाय नमः इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजका
चार्य श्री स्वामी ईश्वरस्वरूपानंद भारती पूज्यपादशिष्य श्री स्वामी
माधवस्वरूपानंद भारती विरचिता तर्कसंग्रह भाषाटीका सुबोधनी

॥श्री॥

दाऊजीअग्निहोत्री के सिद्ध विनायक यन्त्रालय में सर्व शास्त्रों के ग्रंथ हैं और बंबई कलकत्ता बनारस इलाहाबाद लखनऊ मथुरा आगरा आदि नगरों की छपी हुई पुस्तकें मिलती हैं जिन लोगों को चाहिये -॥ का टिकट भेजकर सूची पत्र मंगा कर देखें

पुस्तकें बंबई की	दाम
महा भारत	५०)
भागवत मोटे अक्षर की	१५)
भागवत महीन अक्षर की	१०)
हरिवंश	६)
काशी खंड	७)

और अनेक प्रकार
की पुस्तकें
हैं

